अष्टछाप सागर

(भाग—१)

• सम्पादक •

डॉ. अच्युतलाल भट्ट

श्रीराधाकृष्ण धानुका प्रकाशन संस्थान

वृन्दावन

परमानन्ददास

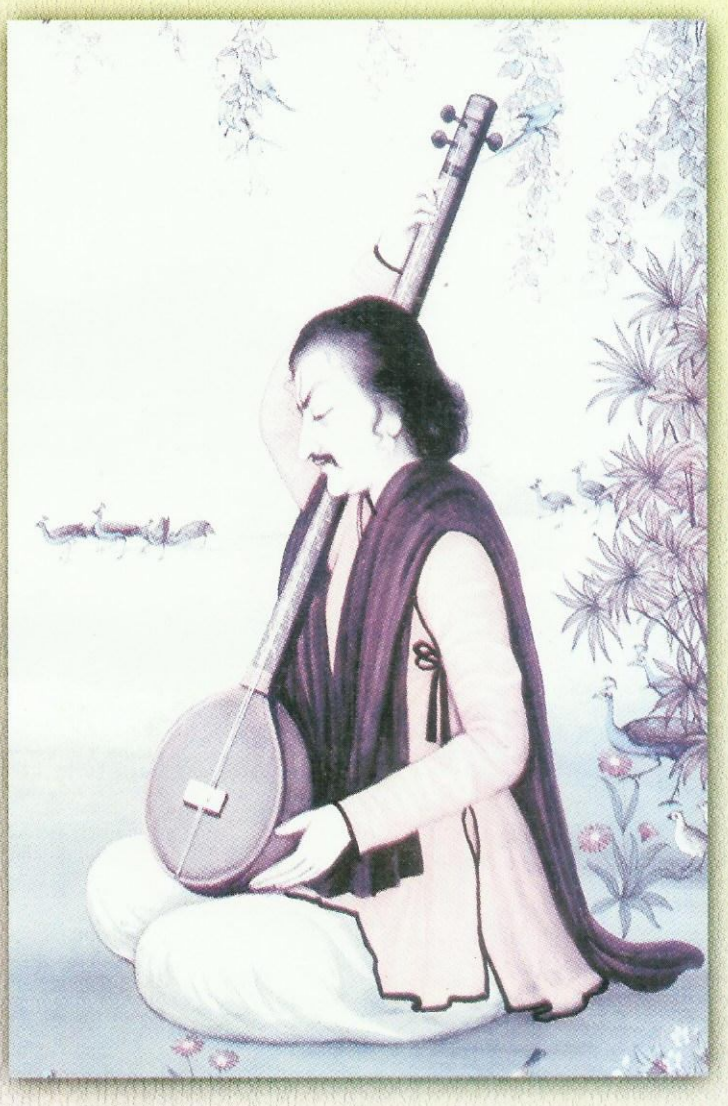

भक्तकवि श्रीपरमानन्ददासजी

परमानन्ददास–प्रशस्ति

पौगण्ड बाल कैशोर गोप लीला सब गाई।
अचरज कहा यह बात हुती पहिलौ जु सखाई।।
नैनन नीर प्रबाह रहत रोमांच रैन–दिन।
गदगद गिरा उदार श्याम शोभा भीज्यौ तन।।
सारंग छाप ताकी भई श्रवन सुनत आवेश देत।
ब्रजबधू रीति कलियुग विषै परमानन्द भयौ प्रेमकेत।।

–भक्तमाल–श्रीनाभादास जी–(७४)

परमानन्ददास जीवनीसूत्र

जन्म–

१–अनुमानतः सं० १५५० अगहन सुदी ७ सोमवार (श्रीगोकुलनाथ जी के जन्मोत्सव के साथ गुप्त उत्सव)

२–कन्नौज

३–श्रीवल्लभाचार्य से १५ वर्ष छोटे होने की प्रसिद्धि।

परिवार–

१–माता, पिता निर्धन (नाम अज्ञात) परन्तु धन–लोलुप।

२–कान्यकुब्ज ब्राह्मण।

३–अविवाहित। धन संग्रह के प्रश्न पर पिता से अनवन।

शिक्षा–

१–कन्नौज में ही शिक्षित; शिक्षागुरु का उल्लेख नहीं।

२–सम्प्रदाय–प्रवेश से पूर्व ही गायन–कीर्तन में सुदूर ख्यातिप्राप्त, अतः गायन–शिक्षा तथा हरि–कीर्त्तन के निमित्त लोगों का आगमन। स्वामी नाम से विख्यात। विरह के पदों का गायन–बाद में आचार्य जी की आज्ञा से वात्सल्य के पदों का गायन।

३–बड़े कवीश्वर, सदाचारी एवं कलाप्रेमी।

सम्प्रदाय–प्रवेश–

१–ज्येष्ठ शुक्ल १२ सं० १५७७ (लगभग २६ वर्ष की अवस्था में)

२–अडैल (प्रयाग) में महाप्रभु के शरणागत। एवं वहीं कुछ समय श्रीनवनीत प्रिय जी के सम्मुख कीर्तन–सेवा।

निवास–

अडैल (प्रयाग), फिर गोकुल एवं फिर स्थायी रूप से सुरभी कुण्ड, जतीपुरा, गोवर्द्धन।

अन्तिम समय–

लगभग सं० १६४०–४१, भाद्र कृष्ण ६, मध्याह्न।

रचनाएँ–

''परमानन्द सागर'' लगभग २००० पद।

स्वयं भी 'सागर' रूप में वार्ता साहित्य में प्रशंसित।

भावात्मक स्वरूप–

गोचारण लीला में 'तोक' एवं कुंज लीला में चन्द्रभागा सखी।

विशेष–प्रसंग–

१–परमानन्ददास जी के माता पिता निर्धन थे। इस बालक के जन्म के समय एक सेठ ने उन्हें बहुत द्रव्य दिया जिससे उन्हें बहुत आनन्द हुआ एवं बालक का नाम 'परमानन्द' रख दिया। बाद में परमानन्द बालक का महोल्लास पूर्वक यज्ञोपवीत हुआ।

२–एक बार कन्नौज में अकाल पड़ा। हाकिम ने पिता का सारा धन लूट लिया। पिता कन्नौज छोड़कर परदेश चले गये। वैराग्यमय वृत्ति से परमानन्ददास कन्नौज में ही रह गए एवं अविवाहित रहे। घर में 'बटोही' की तरह रहे। कवीश्वर–गायक होने से अपने शिष्यों के एवं समाज में 'स्वामी' रूप में प्रसिद्ध थे। कभी माघ मास में प्रयाग यात्रा की एवं वहीं श्रीवल्लभ के शरणागत हुए।

३–श्रीवल्लभाचार्य जी के साथ अडैल से व्रज आते समय मार्ग में कन्नौज में श्रीआचार्य जी ने रुककर उनका अतिथि सत्कार ग्रहण किया। परमानन्ददास ने तभी ''हरि तेरी लीला की सुधि आवै'' इस विरह पद का गायन किया जिससे श्रीवल्लभ को भी तीन दिनों तक भावावेश रहा।

४–कभी सूरदास कुम्भनदास एवं रामदास आदि वैष्णव इनसे मिलने इनकी कुटी पर सुरभी कुंड गए, सत्संग में इन्हें अति आनन्द एवं भगवत् कृपा का अनुभव हुआ। ये बाल्यकाल से ही सन्त सेवी रहे।

५–उनमें गुरु भगवत् एवं धाम निष्ठा दृढ़ थी। अतः व्रज छोड़कर फिर कहीं तीर्थ यात्रा नहीं गए। एक बार कन्नौज में गृह स्थितिकाल में भी पिता को उपदेश देते हुए उन्होंने कहा था–''तुम खायवे लायक मोसौं नित्य अन्न लेहू और बैठे–बैठे ठाकुर जी कौ नाम लियौ करौ। जो अब निर्धन भये हौ तासों अब तौ धन कौ मोह छोड़ो।''

६–कभी गोकुल में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव "दधि कांदो" में ये अति आनन्द विभोर हो गए। वही दशा पुनः गोवर्धन में भी हुई। तब गुसाईं जी ने

कहा–"जैसे कुम्भनदास को किशोर लीला में निरोध भयौ सो तैसौ बाल लीला में परमानन्ददास कौ निरोध भयौ।"

७–अन्तिम समय इन्होंने भावावेश में किसी से बोलना छोड़ दिया श्रीगुसाईं जी स्वयं इनके पास पधारे तब इन्होंने पद गाया–"प्रीति तौ नन्दनन्दन सौं कीजै" अपने मन की स्थिति युगल लीला में बताते हुए यह पद गाया–"राधे बैठी तिलक संभारति"।

८–लीला प्रवेश के बाद श्रीविट्ठलनाथ जी ने एक बार उनकी प्रशंसा इस प्रकार की "जो ये पुष्टि मार्ग में दो ही 'सागर' भए एक तौ सूरदास और दूसरे परमानन्ददास। सो तिनकौ हृदय अगाध रस भगवद् लीला–रूप जहाँ रत्न भरे हैं...." जैसे–

धामनिष्ठा–कहा करौ बैकुण्ठ हि जाय।
श्रीराधा निष्ठाधानि ए राधिका के चरण।।

९–'सारंग' राग में विशेष पद रचना करने के कारण इनकी 'सारंग' छाप पड़ गई।

काव्य वैशष्ट्य–

'सागर' पदवी से विभूषित परमानन्ददास का काव्य विशालता भाव–रत्नाकरता अगाधता एवं रसनिधिता की दृष्टि से 'सागर' ही है। उनका वर्ण्य विषय श्रीसूरदासजी के समान प्रमुखतः श्रीमद्भागवत दशम स्कन्धीय लीलाएँ ही है तथापि श्रीमद्भागवत पर आधारित अन्य अवतार प्रसंगों को भी उन्होंने गाया है। जैसा बलराम प्रसंग (१२१०) नृसिंह जी, वामन जी आदि, इनके अतिरिक्त श्रीवल्लभाचार्य जी, श्रीगुसांई जी एवं यमुना जी सम्बन्धी स्फुट–पद हैं परन्तु वे कहीं भी हरि लीला की मर्य्यादा से बाहर नहीं जाते हैं। श्रीमद्भागवत की दशम स्कन्ध की सुबोधिनी टीका उन्होंने श्रीवल्लभ एवं सत्संगी जनों से सुनी एवं विचारी थी एवं श्रीगोकुल में श्रीनवनीत प्रिया जी का एवं गोवर्धन में श्रीनाथजी के सेवा के नित्यक्रम एवं वर्षोत्सवों का उन्होंने साक्षात् दर्शन किया था। इन सभी से उद्दीपित भावोल्लास में उनका काव्य प्रस्फुटित हुआ है। यों तो श्रीमद्भागवत दशम स्कन्ध में वर्णित सम्पूर्ण व्रजलीला (प्रमुखतः बाल्यलीला) उनका प्रिय विषय है। तथापि पुर–लीला के कुछ विषय जैसे जरासंध–प्रसंग, माथुर–विरह, रुक्मिणी–सत्यभामा–प्रसंग, सुदामा–चरित्र, कुरुक्षेत्र–मिलन आदि का भी

रसिकनी राधा पलना झूलै
परमानन्द बलि बलि इह जोरी सुन्दर सांवरे पी की। (५४)

अनेक स्थलों पर बाल्यलीला में भगवत्ता एवं ऐश्वर्य का प्रकाशन किया गया है–जैसे पाण्डे–भोजन की लीला (१०२) नन्दबाबा द्वारा नारायण पूजन के समय श्रीकृष्ण द्वारा सालग्राम शिला को मुख में मेल लेना, आदि।

रसोल्लास एवं आनन्दोल्लास उनके काव्य का प्राण–तत्त्व है जन्मोत्सव, बाल्यचपलता एवं सगाई आदि प्रसंगों में यह उल्लास सहज दीखता है–

मैया मोहि ऐसी दुलहन भावै।
जैसे यह काहू की टटोंनियां रुनुक झुनक घर आवै।। (१५१)

बरसाने वृषभानु कुंवर कौं तेल चढ़ावै गोरी। (पद सं० १५३)

इसी उल्लास के प्रतीक है मैया, माई री, देखो सखी, हो, आदि संबोधन।

कुछ अद्‌भुत रसमय प्रसंग उनकी भाव तन्मयता को प्रकट करते हैं–जैसे छाक प्रसंग में शब्दचित्र–रूप में वर्णित गोपी की उत्कण्ठा (पद सं० २६६, २६५ आदि)

तुमकौं टेरि टेरि हौ हारी।
देखौ मेरे उर कौ पसीना उर कौ अंचल भीनौ।
परमानन्द प्रभु प्रीति जानकै धाइ आलिंगन कीनौ।। २६७

ऐसे ही कुछ दृश्य 'संकेत' एवं गोदोहन में भी प्राप्त होते हैं जिनमें युगल की उत्कंठा मूर्तिमती हो उठी है।

सुआ पढ़ावति सारंग नैनी (८४१)

पतियां बाचे हून आवै (१०८०)

प्रथम सनेह कठिन मेरी माई.....
नोवत वृष भगई चलि गैया हसत सखा कहा दुहत कन्हाई। (३८६)

पूर्वराग प्रसंग में कुछ दृश्य तो अद्‌भुत है। जैसे गोदोहन का यही दृश्य–

पौछत कान्ह गाइ की पीठ।
कर मुख मूंदि मुदित मुसकावनि, बार बार राधा तन डीठि।
कर दोहिनी दुहावन आई बछरा दियौ खिरक में छोरि।
गहहु गहहु तुम्हरे पाइ लागौ पियतन चितै हंसी मुख मोरि।
कछुक सकुच बलभद्र वीर की घरहि चली दै उलटी सैन।
परमानन्द स्वामी रति नायक दुहि दिस झगरौ लगायौ मैन-(३८८)

वात्सल्य की भांति मधुररस के विविध पक्षों को भी उन्होंने कुशलतापूर्वक अपनाया है। जैसे व्रज एवं वृन्दावन दोनों ही रसों में श्रीराधा प्रेम (मधु स्नेह) के उल्लास के लिए वे श्रीचन्द्रावली जी के प्रेम (घृतस्नेह) का भी पर्याप्त वर्णन करते हैं, जिसे अन्य रसिकों ने कम ही महत्त्व दिया है प्रमुखतः दानलीला प्रसंग में चन्द्रावली जी का अपना स्थान है। (६१०)

इह हरि के उर कौ गज मोती।
चन्द्रावली ! कहाँ तै पायौ दूरि करत दिन मनि की जोती (६३३)

न जैहौं भाई बेचनि दह्यौ।
नन्द गोप को कुबरि लाड़लौ बन महि दारि रह्यौ। (६३४)

सख्यरस के कुछ पद स्वतंत्र संदर्भों में भी उतने ही प्रभावशाली हैं जितने कथा प्रसंग में जैसे गो–सेवा का यह पद–

गोधन पूजहि गोधन गावहि।
गोधन के सेवक संतत हम गोधन ही कौ माथ नवावहि।
गोधन मात पिता गुरु गोधन, गोधन देव जाहि नित ध्यावहिं।। (६५५)

भाववैचित्र्य के कारण परमानन्द सागर में कौतूहल बना रहता है एवं पुनरुक्ति खलती नहीं। लीला (घटना क्रम) की पृष्ठ भूमि भी इसमें सहायक है।

वात्सल्य एवं सख्यरस के समान मधुर रस का परिपाक पूर्वक वर्णन यहाँ प्रभूत रूप में प्राप्त है–गोदोहन (३८६) छाक (२६४) संकेत (६६४) रास–मान–दूती के प्रसंग बहुत मोहक हैं। औपासनिक दृष्टि से उनमें श्री कृष्णचरण दास्य प्रधानता ही झलकती है, जो पुष्टिमार्गीय रसपद्धति के अनुरूप है।

बैठे लाल कालिन्दी के तीरा।
लै राधे मोहन पठयौ है इहै प्रसाद कौ बीरा।। (६९७)

मधुर रस के सभी पक्ष, स्वपक्ष, प्रतिपक्ष, स्वकीया, परकीया, नित्यविहार, अभिसार, गोष्ठ–कुंज आदि का समावेश उनके काव्य में है जैसे–

लाल नैंक देखिये भवन हमारौ।
सासु हमारी खरिक सिधारी प्यौ बन गयौ सकारौ।
आसपास घर सबै को बसत है इहै एकान्त निन्यारौ।। (५२७)

रूप एवं शोभा वर्णन में उनकी तन्मयता दर्शनीय है–(बालरूप १२२७) धमार (१२०२) आदि की कुछ छवि तो अति मनोरम हैं–

सिर धरै पखौआ मोर के।
गुंजाफल फूलनि के लटकन शोभित नन्द-किशोर के। (५३४)

संयोग शृंगार में अभिसार, दूती, रास, सुरत विलास के अनेकों मनमोहक प्रसंग वर्णित है जैसे–

राधे तैं लोचन दूत किए।
नन्द भवन हैं मोहन माधौ सैन बुलाइ लिए।
व्रज तै निकसि गवन कियौ वन कौ अति सै चतुर हिए।
कुंज कुटी में बैठ स्याम घन उर पर उरज दिए।
कमल-नयन मृगनैनि परस्पर हिलमिल अधर पिए।
परमानन्द सकल दिन मान्यौ कहत हैं हम जु जिये।।

विरह में भी–पूर्व दीप्ति (१०६०) व्याकुलता (१०६५) दीनता (१०६६) विज्ञप्ति (१०७०) स्मृति (१०८६) क्लेश (१०६७) आदि भावों का हृदयग्राही निरूपण है। इसी प्रकार, माननी कलहान्तरिता (८४०) उत्कंठिता (१०७६) आदि नायिका–भेद उनके काव्य में देखे जा सकते हैं।

कलात्मकता भावों की अनुबंधिनी होकर स्वतः उनके काव्य में विराजमान है। जैसे विष–गारुणिक का रूपक (५०६) अथवा–पपीहे का यह रूपक–

ऐसी मैं देखी तन की ईहा।
अधर पीयूष पियावत काहे न तोकों भयौ मदन गोपाल पपीहा (७१८)

विविध कथा प्रसंगों के कुछ बड़े पद भी हैं। इनमें कवि की प्रबंध सामर्थ के दर्शन किए जा सकते हैं–जैसे युगलगीत (८४२) धमार, भ्रमरगीत (११२६) हिंडोरा (१२६७) धमार (१२११)। साम्प्रदायिक सिद्धान्त जैसे आश्रय (१३४०), महत्त्व–ज्ञान (१३६२), भावसेवा प्रवीणता (१३४६, १३५१), भक्ति में अनन्यता (१३३८) तो उनके काव्य में सर्वत्र देखे जा सकते हैं। श्रीकृष्ण यह रसात्मक स्वरूप इस प्रसंग में उपलक्षण रूप में प्रस्तुत है–

आनन्द की निधि नन्द कुमार। (५४५) (सिद्धान्त)
परब्रह्म नर भेष नराकृत जगमोहन लीला अवतार। (सिद्धान्त)
रसिक सिरोमनि नन्दनन्दन (५४७) (सिद्धान्त)
सेवा मदन गोपाल की मुक्ति हू तै मीठी (१३३८) (सेवासक्ति)
हरि तेरी लीला की सुधि आवति (६६५) (लीलासक्ति)
पिय मुख देखत ही पै रहिए (४४७) (रूपासक्ति)
बोले माई गोवर्धन पर मुरवा (८०६) (वृन्दावन शोभा)

यहाँ अनेकों अर्थ गाम्भीर्यमय सूक्तियां हैं जिनमें जीवन एवं उपासना के सिद्धान्त भरे पड़े हैं।

परमानन्द प्रीति है ऐसी कहा रांक कहा रानौ (५०४)

लोभ की प्रीति दिवस द्वैचार।

उनके काव्य में छन्द विधान अन्य अष्टछाप सखाओं की तुलना में अधिक साधु है। कहीं–कहीं जो छन्द भंग या पंक्तियों में विषमता दीखती है वह या तो अवग्रह सापेक्ष है या गायन सापेक्ष अथवा प्रतिलिपि कर्ताओं की कृपा। भाषा के कुछ प्रयोग बड़े अप्रचलित एवं शोध सापेक्ष हैं जैसे–कहिवी (१०८७) की वी (१०६७) उकार की मात्रा का अनावश्यक प्रयोग जैसे–नागरु, उजागरु, सागरु, कगरु आदि (११०५) कुछ ठेठ शब्दों के प्रयोग से अधिक रसात्मकता आ गई है जैसे–लपटिया (२२१) भिलसाइ, पत्याइ (२२५), नोई (४६३), चपरात (४६१), चवाउ (४६२), नोवत (४६७), जतिया–चार (१०५३), कहलैनी (८३६), गीधी (५०६), अचगरौ (६०६), विकरि (६४४), रवकि (७००), कोतै (११११), 'वह' के लिए 'उदय' के प्रयोग (६४८, १०७६)।

संगीत का तलदर्शी ज्ञान उनके काव्य में सर्वत्र प्रकट हुआ है। अनेक रागों एवं तालों का समावेश होने पर भी 'सारंग' राग उनका अति प्रियराग है। भक्तमाल में "सारंग छाप ताकी भई" कहकर इस ओर संकेत भी किया गया है। एक पद में वे उल्लेख करते हैं–

अब हों कैसे रहौ घर।

मदनगोपाल बजाई मुरली मधुर मनोहर सारंग के स्वर (४३६)

अस्तु भाव, विचार, कला, अभिव्यक्ति–कौशल, संगीत, औपासनिक गाम्भीर्य, सम्प्रेषण एवं विषय–व्यापकता सभी दृष्टियों से यह काव्य 'सागर' ही है। इसकी मधुरता एवं महिमा समालोचना सापेक्ष नहीं वह स्वयं ही अपनी मधुरिमा महिमा एवं लीला का प्रकाशन करेगा। यह लिखना–लिखाना तो परम्परा का निर्वाह अथवा यत्किंचित् तारा–अरुन्धती न्याय मात्र है। इत्यलम्।

आधार सामग्री–

मूल पाठ एवं वर्गीकरण "परमानन्द सागर" विद्याविभाग कांकरोली (अष्टछाप स्मारक समिति) संस्करण सं० २०१६ वि० से साभार ग्रहण किया गया है। जिसकी आधारसामग्री विद्या विभाग (कांकरोली) में सुरक्षित प्रमुखतः क, ख, एवं ग तीन प्रतियां हैं–जो क्रमशः (क) हिन्दी बंध सं० ४५, (ख) हिन्दी बंध सं० ५७/४ एवं (ग) हिन्दी बन्ध सं० ५७/३ के रूप में प्राप्त हैं। पुनः उचित संशोधन समायोजन एवं नई साजसज्जा में प्रस्तुत प्रकाशन सुधीजनों के करकमलों में प्रस्तुत है।

विषय-सूची

विषय	पद-संख्या	पृष्ठ सं.
१. जन्म समय		**१–१७**
• जन्म–समय	१–३३	
• पलना	३४–४५	
• स्वामिनीजी कौ जन्म–समय	४६–५५	
२. छठी	५६–६१	**१७–१६**
३. बाल–लीला		**१६–५०**
• नाम–करण	६२–६४	
• अन्न–प्राशन	६५–६६	
• कर्ण–बेध	७०–७२	
• शयनोत्थित	७३–७८	
• कलेऊ	७६–८१	
• मंगल–आरती	८२–८३	
• प्रातः मुख–दर्शन	८४–८८	
• बाल–लीला	८६–१३०	
• मृत्तिका–भक्षण	१३१	
• दधि–मन्थन	१३२–१३६	
• ऊखल–बन्धन	१४०–१४१	
• फल–विक्रय	१४२–१४४	
• विवाह	१४५–१५६	
४. उराहनौ		**५१–६६**
• गोपिका–वचन जसोदाजू सौं	१६०–१८१	
• जसोदा–वचन गोपी–प्रति	१८२–१६६	
• जसोदा–वचन प्रभु–प्रति	२००–२०८	
• गोपिका–वचन प्रभु–प्रति	२०६–२२०	
• प्रभु–वचन जसोदा–प्रति	२२१–२२२	
५. मिषान्तर–दर्शन	२२३–२२७	**६६–७०**

६. खेल		**७१—७६**
• सखीन—संग	२२८—२३२	
• सखान—संग	२३३—२४३	
७. यमुना—तीर—मिलन	२४४—२५३	**७६—७९**
८. असुर—मर्दन	२५४—२६२	**७९—८१**
९. गो—चारण	२६३—२८२	**८१—८७**
१०. भोजन—समय		**८७—१०१**
• छाक	२८३—३०६	
• भोजन	३१०—३३३	
• अँचवन—बीरी	३३४—३३८	
११. आवनी	३३९—३८०	**१०१—११३**
१२. गो—दोहन	३८१—३८८	**११३—११८**
१३. ब्यारु	३९९—४०३	**११८—११९**
१४. आसक्ति		**११९—१५६**
• गोपिकाजू के वचन	४०४—४६६	
• आसक्ति कौ वर्णन	४६७—५१५	
• साक्षात् स्वामिनीजू के वचन	५१६—५२४	
• साक्षात् भक्त—प्रार्थना प्रभु—प्रति	५२५—५२६	
• साक्षात् प्रभुजी—वचन भक्त—प्रति	५३०—५३१	
१५. स्वरूप—शोभा		**१५६—१७२**
• प्रभु—स्वरूप—वर्णन	५३२—५७७	
• स्वामिनी—स्वरूप—वर्णन	५७८—५८५	
१६. व्रताचरण		**१७३—१७४**
• कात्यायनी	५८६—५८८	
• गनगौर	५८९—५९१	
१७. द्विज—पत्नी—प्रसंग	५९२—५९३	**१७४—१७५**
१८. दान—प्रसंग		**१७५—१८८**
• गोपी—वचन	५९४—६१९	
• प्रभु—वचन	६२०—६२९	
• परस्पर गोपी—वचन	६३०—६३८	
• गोपी—वचन यशोदा—प्रति	६३९—६४१	

१६. दीपमालिका–अन्नकूट		**१८८–२०२**
• धनतेरस	६४२	
• गो–क्रीडन	६४३–६४७	
• दीपमालिका	६४८–६५२	
• गोवर्द्धन–पूजा	६५३–६६१	
• गोवर्द्धन–धारण	६६२–६८६	
• भाईदूज	६८७	
• प्रबोधिनी	६८८–६९२	
२०. रास		**२०२–२४४**
• मान	६९३–७६६	
• दूती–वचन स्वामिनी–प्रति	६९३–७५१	
• दूती–वचन प्रभु–प्रति	७५२–७५८	
• मानापनोदन	७५९–७६६	
• रास	७६७–७७०	
• अन्तर्धान	७७१–७७५	
• महारास	७७६–७८४	
• जल–क्रीड़ा	७८५–७८७	
• युगल–रस–वर्णन	७८८–८२२	
• सुरतान्त	८२३–८३१	
• खण्डिता	८३२–८४१	
२१. युगल–गीत	८४२–८४३	**२४४–२४५**
२२. मथुरा–पधारिबौ	८४४–८८०	**२४५–२५५**
२३. गोपी–विरह	८८१–१०४४	**२५५–३००**
२४. भ्रमर–गीत		**३००–३३३**
• उद्धव–गोपी–प्रसंग	१०४५–११३७	
• जसोदा–नंदजू के वचन	११३८–११४०	
• उद्धव–वचन प्रभु–प्रति	११४१–११४३	
२५. जरासन्ध–युद्ध	११४४	**३३३**
२६. द्वारका–लीला		**३३३–३४०**
• द्वारकानिवास	११४५–११४६	
• रुक्मिणी–सत्यभामा–प्रसंग	११४७–११४९	

- बलदेवजी–प्रसंग ११५०–११६३
- सुदामा–चरित्र ११६४
- कुरुक्षेत्र–मिलन ११६५–११६६

परिशिष्ट

(क) उत्सव और त्यौहार ३४१–३८२

- वामन–द्वादशी ११६८–११७५
- दशहरा ११७६–११८६
- श्रीगुसांईजी ११८७–११८८
- वसन्त ११८९–१२०१
- धमार १२०२–१२११
- डोल १२१२–१२१७
- फूलमण्डनी १२१८–१२२०
- राम–नवमी १२२१–१२३४
- श्रीमहाप्रभुजी १२३५–१२३८
- चन्दन–धारण १२३९–१२४२
- नृसिंह–चतुर्दशी १२४३–१२४७
- गंगा–दशमी १२४८–१२५१
- स्नान–यात्रा १२५२
- रथयात्रा १२५३–१२५७
- वर्षा (मल्हार) १२५८–१२६५
- हिण्डोरा १२६६–१२७६
- पवित्रा १२८०–१२८७
- राखी १२८८–१२९८

(ख) आश्रय और विनय ३८३–४११

- अपनौ दीनत्व १२९९–१३५४
- नाम–माहात्म्य १३५५–१३६६
- व्रज–महिमा १३६७–१३७६
- श्रीयमुनाजी १३७७–१३८७

(ग) प्रकीर्ण ४११–४१२

- स्फुट पद १–५

परमानन्ददास–पदसंग्रह

प्रतीक अनुक्रमणिका

प्रतीक	पद सं.
(अ)	
अकेली बन बन डोलति रही	२६६
अति मंजुल जल–प्रबाह मनोहर	१३८७
अति रति स्यामसुंदर सौं बाढी	७६३
अद्‌भुत गति तेरी बारे कन्हैया	२६०
अटपटी दीबौ छाँडहु लाल !	२१२
अटपटी बहुतै ही हौ देत	२१३
अनमनी बैठीए रहै	७५१
अन्नप्रासन–दिन नंदलाल कौ	६६
अनुग्रह तौ मानौं गोविंद	१३५२
अपने गोपाल की बलिहारी	५४१
अपने चरनकमल कौ मधुकर	१३५४
अपने जन कहँ राज दियौ	८७६
अपने ब्रज कौं नाथ निबाहिये	६७७
अपने रंग लड बाबरौ	१६६
अपने लाल के रँगराती	४५७
अपने लाल कौ ब्याह करौंगी	१४६
अपने हाथ कंस मैं मार्‌यौ	८५१
अपनी गरीबी नंद सुनावै	११३६
अपनौ देव गोवर्द्धन रानौ	६६०
अपनौ पहिलौ प्रेम बिचारिबौ	१०८४
अब ए नैन भए अपराधी	११५३
अब कत सुधि आवै हमारी	१००६
अब कैं जो लाल मिलै	७७१
अब कै बन–बन फिरति वही	६०६

प्रतीक	पद सं.
अब कैसें पावत है आवनु	१०१०
अब घर कियौ द्वारका नगरी	११५८
अब जिनि मोहि भरौ नँदनंदन	१२००
अब डर कौन कौ रे भैया !	२५८
अब दरसन की साधनि मरियतु	६७८
अब न छाँडों चरनकमल	६६७
अब ब्रजनाथ ! कछू करौ	११२३
अब मन बसी गोपाल–मूरति	१०६४
अब मोकों मिलै दधि कौ चोर	४१२
अब मोहि सोवन दै री माई !	१२८
अब राज पायौ मथुरा कौ मोहन	११०८
अब सब चाहनि लागे	११४०
अब हठ छाँडि देहु रे !	१२७
अबहि उराहनौ दै गई अरी !	२२२
अबहि कछु औरै चालि चलाई	६१३
अब हौं कहा करौं री माई !	४८७
अब हौं कैसै रहौं घर	४३६
अब हौं गहरे पैठि डरानी	६७०
अमृत निचोइ कियौ इक ठौर	५८२
अराधन राधिका कौ नीकौ	८०५
अरी अबला ! तेरे बल हि न और	५७८
अरी ! तू अब मथुरा तैं आई	८४६
अरी ! मेरे सौं कौन लरी	२०५
अरी ! मोपें दान माँगै कुँवर	६३८
अलक लड़ी मोहन जू की जोरी	८००
अहो तुम गोविंद सौं कहियो	८८६

अहो ! नंदरानी कौ भाग्य बड़ौ १२६१
अहो नागरी ! गोवर्द्धन–गिरि की ६२८
अहो बल ! हौं जिय बहुत डराति ३७३
अहो ! रस–मौरन मौरें लाल स्याम १२११

(आ)

आई जु फिर गई बिनु आदर ८४०
आईं हम पाँइनु परन ७६८
आई हौं इनहीं पाँइनु दौरी २२३
आउ हो आउ गुसाईं नँदनंदन ३७५
आए आए सुनियत बाग ८६३
आए आए होइ रहे नँद–ढोटा ८६६
आए मेरे पाहुने मिलनु ११६५
आए मोरें नंदनंदन के प्यारे १३४८
आँखिनि आगे हू स्याम ४८०
आँगन खेलहु झनक–मनक १०५
आछे–आछे बोल गडे ४६७
आछौ नीकौ लौनौ मुख ८४
आँधरे की दई चरावै १३४५
आजु अजोध्या प्रगटे राम १२२२
आजु अजोध्या मंगलचार १२२४
आजु अति आनंदे ब्रजराइ २७६
आजु अति बाढ्यौ है अनुराग २२
आजु अमावस दीपमालिका ६४८
आजु एकादसी देव–दिवारी ६८६
आजु कुछ नींकी बात सुनावै १०४५
आजु कुहू की राति माधौ ६४६
आजु की घरी विलँबि रहौ ८५८
आजु गही है माखन–चोरी २१७
आजु गोकुल में बजत बधाई ३२
आजु छठी जसुमति के सुत की ५६
आजु तुम इहाँई रहौ कान्ह प्यारे ८१८
आजु तेरी चूनरी अधिक बनी ५७६
आजु दधि मीठौ मदनगोपाल २८८
आजु दसहरा दिन सुखदाई ११८६
आजु धरी गिरिधर पिय धोती ५६१
आजु नंदराइ कैं आनंद भयौ १
आजु नवकुंजनि की अति सोभा ८१५
आजु नीकौ जम्यौ राग आसावरी ७६७
आजु फिरति दुहाई नंद की ५३
आजु ब्रज पर बरषत बरषा सी १२६४
आजु बड़ौ दिन बिजै–दसमी ११०५
आजु बधाई की विधि नीकी ४८
आजु बधाए कौ दिन नीकौ २
आजु बनी, दंपति वर जोरी ८०२
आजु बनी बृंदावन तें आवनि ३५५
आजु बने मोहन झूलत डोल १२१६
आजु बने सखि ! नंदकुमार ७६६
आजु मृदंग मेघ–धुनि गाजै ४२
आजु महर–घर छठी जागति ६०
आजु महा मंगल महरानें ६२
आजु माई ! मोहन खेलत होरी १२०६
आजु रन जीत्यो है गोबिंद ११४४
आजु रावलि में जै–जैकार ४६
आजु लाल की होति सगाई १५२
आजु सखी ! मोहन इहि कुंज ७४१
आजु सखी ! रघुनंदन जाए १२२३
आजु सवारे के भूखे हौ मोहन ! ३११
आठें भादौं की अर्द्ध राति १०
आठें भादौं की उजियारी ५०
आनँद आजु कुंज के द्वार ६८८
आनँद की निधि नंदकुमार ५४५

आनँद–सिंधु बढ्यो हरि–तन में ५५१
आनंदी चरावत गइयाँ २७०
आयौ मथुरा मल्ल हठीलौ ८७०
आरती जुगलकिसोर की कीजै ३८०
आली री ! रास–मंडल मध्य ७७६
आली री ! सावन–तीज सुहाग १२७७
आवत मदनगोपाल त्रिभंगी ३६६
आवत मोहन धेनु लिये ३७८
आवत लाल अरी ! चलि माई ७६४
आवत हैं गोकुल के लोचन ३६३
आवत आनँद–कंद–दुलारी ८२५
आवति ही गैल चली ६००
आवति ही माई ! साँकरी खोरि १७३
आवहु रे ! आवहु रे ! ग्वालौ ! ६६५
आवै–आवै गोपाल बन्यौ ३५२
आवै निरंकुस मातौ हाथी ८६६
आवै बाबा नंद कौ हाथी ८६७
आवौ मेरे रच्छा बाँधौ लाल ! १२६२
आसौ मास सुभ मंगल दसमी ११७६

(इ)

इतनक सौ गोपाल कहा करि जानैं १६८
इतनि दूरि मनमोहन की कछु ६६२
इतराइ चली थोरे पानी ज्यों भादौं ७१२
इनि मोरनि की भाँति देखि नाचै ३७६
इन्ह बातनि के मारे मरियत १०७७
इहि गोपाल की राजधानी ११५४
इहि गौइल रे अनोंखे दानी ! ६११
इहि जिय बात परस्पर भावै २३६
इह ठौर जहाँ हरि खेलते ६४५
इहि तन वारि डारौं कमलनयन ११७
इहि तौ भाग्य–पुरुष मेरी माई ! ३२५
इहि प्रसंग ऐसौ है माधौ ! ७५२
इहि पखानों लोगनि कौ (इहै.....) ६३५
इहि पट–पीत कहाँ तैं पायौ ८०८
इहि बिरियाँ बन तें आवते ६२०
इहि मेरे लाल कौ अन्न–प्रासनु ६५
इहि हरि के उर कौ गज–मोती ६३३

(उ)

उठि काहे न मोहन–मुख जोवै ७३८
उठु गोपाल प्रातकाल देखौं मुख तेरौ८५
उपरेंना स्याम–तमाल कौ ८२६
उय मनहु बुलावत है गोपालहि ६४८
उह सुधि कमलनयन बिसराई १०७६

(ऊ)

ऊधौ ! इहि दुख छीन गई १०८६
ऊधौ कमलनयन कब आवै ? १११६
ऊधौ ! कछु नाहिंन परत कही ११२८
ऊधौ ! कवन बैर चातक–पिक ११०४
ऊधौ ! क्यों बिसरत उह विनोद १०८१
ऊधौ ! जाइ जाइ कहै दूरि करै ११०६
ऊधौ जी ! मिलत ही लै धरियो १०६५
ऊधौ ! तुम हौ निकट के बासी १०५०
ऊधौ ! बिनु जीवन क्यों जीवहिं ११०७
ऊधौ ! भए विदेसी माधौ १०६६
ऊधौ ! बेदन का सौं कहिये ? १११७
ऊधौ ! सुनि–सुनि आवति हाँसी १११६
ऊधौ ! हौं दूबरी वियोग १११५

(ए)

एक गाउँ को बासु कैसें ४२२
एक समै जसुमति अपनी सखी सौं १०६
ए ढोटा हठि हरत परायौ मन ४२०
एते दिन अवधि के टारे ६७६
ए दिन ऐसें ही गए री ! १००८
ए बसुदेव के दोउ ढोटा ११६
ए भरी दोहनी दूध हाथ तै १७१

(ऐ)

ऐसी विषै–विष–पान सों प्रीति १३४७
ऐसी मैं देखी तन की ईहा ७१८
ऐसी मैं देखी ब्रज की रीति ११४१
ऐसे दिन काहू जिनि बीतौ १०२६
ऐसे माई ! लरिकन सौं आदेस १६१
ऐसे लरिका कतहुँ न देखे १७४
ऐसौ ई रथ ऐसोई सब साजु ११३७
ऐसौ जन प्रह्लाद उबार्‌यौ १२४७
ऐसौ बटुक कहौ कैसै पैयतु ११७५
ऐसौ मन तैं कियो मेरे ललना ६४१

(ओ)

ओढें लाल उपरैनी झीनी ५४३
ओरंगौ माधौ जानराइ १३४३
ओसेरनि जियरा तपत है माई री ! ६८६

(औ)

औगुन छाँडि मानि कह्यौ मेरौ २०८
औचकाँ हरि आइ गए ४२५

(क)

कृष्ण–कथा बिनु कृष्ण–नाम बिनु १३६५
कृष्ण कौं बीरी देति ब्रज–नारी ३३५
कत तू करत प्रेम–रस बाधा ७१३
कत हरि आवत हैं ब्रजवास ११५६
कदँब–तर ठाडे हैं गोपाल ५५६
कदम–तर भली भाँति भयौ भोजन ३०६
कन्हैया हेरी दै गावै २८२
कब की तू दह्यौ धरें सिर डोलति ५०३
कब देखिबे खरिक में ठाढे ? ६८२
कबरी मिलैगौ मेरौ मदनगोपाल ६५३
कब लगि मन करौं हौं गाढौ १०४१
कब लगि मन करौं हौं धीरौ ६१६
कबहुक ऐहें हो ! कुंती–दुख ११६३
कबहुक साँवरौ माई ! गोकुल ६१८
कबहूँ करिहौ धौं दाया १३५३
कबहू न दान सुन्यौ गो–रस कौ ६१५
कबहूँ सुमिरत हैं वे बतियाँ ११२७
कब री ! कन्हैया मोसौं मैया कहि १२१
कमल चंद की सोभा मेटत ६५२
कमल–दल नैननि रीझीं री माई ११४
कमल–दल नैना मोहना ३८६
कमलनयन कमलापति १३२६
कमलनयन कौ मथुरा राजु ६२६
कमलनयन गोकुल के नाइक १३१४
कमलनयन ! तुम बाढे घर के २०६
कमलनयन–बिनु औरु न भावै ६२२
कमलनयन बोलत रूप–निधान ६६४
कमलनयन मधुवन पढि आए ऊधौ ११२६
कमलनयन मनमोहना ! मेरौ मारगु ६०४

कमलनयन–मुख मुरली सोहैं ५६६
कमलनयन राधिका हि मनावत ७६२
कमलनयन स्यामसुंदर निसि के ८३२
कमल–मुख देखत त्रिपति न होइ ५७७
कमल–लोचन कान्ह मधुर गावै ३४८
कर गहि अधर धरी मुरली ७७७
करत कत कमलनयन सौं झगरौ ६३७
करत गोपाल की दुहाई ११६२
करत गोपाल जमुना–जल–क्रीडा ७८५
करत हैं भगतनि की सहाइ ६७३
करति जो कोटि घूँघट की ओट ५८४
करनि दै लोकनि कौं उपहास ४२३
करबट प्रथम लई नँदनंदन १२३
करहुँ कलेऊ राम–कृष्ण मिलि ७६
करि दधि–मोल आजु हौं लैहौं ६२३
करि सनेह दै गए बियोग ११२५
कवन बन जैबौ भैया ! आजु २६६
कवन रस गोपिनि लीनौ घूँटि ८७४
कवन सच टरि गयौ ब्रज केरौ ६७५
कहति है राधिका अहीरि ५२५
कहति हौं बात डराँति–डराँति ८४८
कहा करौं जो हौं मदन–जगाई ४४४
कहा करौं बैकुंठहि जाइ १३७१
कहा करौं मेरी माई ! नंद–लडैते ४०५
कहा चाहत हौ बाल–गोपाल २०३
कहा फूली आवति है राधे ! ८२७
कहा बूझति तन की दुबराई ६३४
कहा रस बरियाई की प्रीति ११२०
कहाँ तैं आए हौ द्विजराज ? १०४४
कहाँ वे तब के दिननि कौ चैन १०१४
कहाँ री ! साँवरौ पाइये खेलिये १०३५
कहि–कहि बोलत धौरी–कारी २८०
कहियो अनाथ के नाथहिं ! १०७०
कहियो जसोदा की असीस ११३८
कहि री भटू तोहिं कहा धौं ५०२
कहै राधा ! देखहु गोविंद ! ८१६
काँकरी कान्ह मोहि मारै २५३
काँध लकुट धरि नंद चले बन २६८
कान्ह अकेले ई सोवत ७२५
कान्ह अंटा चढ़ि चंग उडावत २३७
कान्ह ! कमल–दल–नैन तुम्हारे ५४४
कान्ह मनोहर मीठे बोलै ६१६
कान्ह ! बिनोदी मन–चोर ६३६
कान्ह विनोदी रे मधुबनियाँ ८६१
कान्ह सँदेसे तें ऊ टूटी ६११
का पर ढोटा नैन नचावत है ६०५
का पर ढोटा करत ठकुराई ६०६
काबरि द्वै भरि कै छाक पठई ३०४
कामधेनु हरि नाउँ लियो १३६०
कालिंदी कलि–कलमल–हरनी १३८५
कालिंदी कूल कलोल लोल १३८६
काहे कौं करति री निसा–गवनु ७२६
काहे कौं ग्वालि सिंगार बनावै ७२७
काहे कौं दुराब करत हो माधौ ! २१६
काहे कौं दीनानाथ कहावत १०२०
काहे कौं बिछुरि रहे करुना– ११०६
काहे कौं बिलँबु कियौ बेगि न ६८४
काहे कौं मारग में अघ छेटत ८७२
काहे कौं सिथिल किए मेरे पट ६०२
काहे तें ब्रज कह्यौ रहन १०२८
काहे तैं मदनगोपाल बिरोध्यौ ८७६
काहे न कीजतु कह्यौ २०१

काहे न सेइये गोकुल–नायक १३०१
काहे लाल भूल्यौ प्रेम–बतउआ १०५६
किते दिन गए ऊधौ ! बिनु १११३
किते दिन भए रैनि सुख सोएँ ६१२
किते दिन हरि–देखे–बिनु बीते ६४७
किये माई ! बारू के से घरुवा १०३६
कियौ गोपाल कौ सब होइ १३४०
किलकि हँसे गिरिधर ब्रजराई ६४३
कुंज–भवन बैठे नँदनंदन ८१२
कुंज–भवन में मंगलचार १५६
कुंज वाहि दिखाबहुँ आजु ८१७
कुंज–महल पौढै गोविंद ८१६
कुंज में जेंवत स्यामा–स्याम ३३३
कुंज में बैठे जुगल–किशोर ३३२
कुबिजा हरि मानी तो सबहिनि १०१६
कुमुदवन भली पहुँची आइ २६६
केते ही दिन होइ गए ऊधौ ! ११३२
केतौ सुख लागत माई री ! ४३५
केसी–तृनावर्त्त जिनि मार्‌यौ ८४६
कैसै करि कीजै बेद–कह्यौ ४४२
कैसें छूटै स्याम–सगाई ४४१
कैसै धौं कमलनयन बिनु रहिए १३११
कैसै बनें माई ! मानु करत ७५६
कैसैं माई ! जानि गोपालहिं दैहों ८५६
कैसें माई ! रूसिबौ बनै ७४४
कैसौ माई ! अचरज उपजत भारौ ६७६
क्यों इह भरौं ग्वालिनि सी डोलै १८५
क्यों न जाइ ऐसे की सरन १३१७
क्यों न बनै कुबिजा सौं १०१२
क्यों न मिलै मन दै मोहन कौं ७५०
क्यों ब्रज देखनि है हरि आवत ? ६०४
क्यों री ! तू दिन आवति इहिं ४६६
कोउ मैया ! आम बेचनि आई १४४
कोउ मैया ! बेर बेचनि आई १४३
कोउ माधौ लेइ माधौ लेइ ४५४
कोउ मेरे आँगन ह्वै जु गयौ ४७६
को खेलै ढोटा रहौ नहीं २२६
कोट हू तें कठिन भ्रकुटि की ओट ४६५
को बिसरै उहि गाँइ चरावनि ८४२
कोलाहल जमुना के तीर २५६
कौन बेर भई चले री ! गोपालहिं ८८४
कौन रसिक है इनि बातनि कौ १००१
कौन हौ री ! किनि ठाडी रहौ ६२५

(ख)

खरिक में कौन की हैं गैयाँ ३६७
खेलत गिरिधर रँगमगे रंग १२०६
खेलत चले बजावत तारी २५६
खेलत मैं को का कौ गुसैयाँ २३३
खेलत बनहिं चले जदुराई २६०
खेलि खेलि हो लडैती राधा ११८६

(ग)

गई न आस पापिनी दहै १३३२
गरब काहू कौ सहि न सकै ८४७
गह्यौ नंद सब गोपिनि मिलिकैं २४
गाँइ चराबनि कौ दिन आयौ २६४
गाँइ चराबनि कौ विसनु २७१
गाउँ बसत एते द्यौसनि में ५६६
गावति गोपी मृदु मधु बानी १३६६
गावति मुदित खरिक में गोपर ३६४
गावै–गावै घनस्याम कान्ह जमुना ३४४
ग्वालिनि ! अनमनी सी काहे ७७४

ग्वालिनि ! गो–रस नेंकु चखाउ ६२१
ग्वालिनी ! गोविंद ढौरी लायौ १८८
ग्वालिनी घर की बाढी १६६
ग्वालिनि ! छाँडि दै इहि बाँनि १८४
ग्वालिनि ठाडी मथति दह्यौ ४६४
ग्वालिनि ! तोपें ऐसौ क्यों कहि १८३
ग्वालिनी दूरैं बेचि मह्यौ २२७
ग्वालिनि न्याइ तजै गृह–वास ५४६
ग्वालिनि ! मीठी तेरी छाछि ६२२
ग्वालिनि हँसति–हँसति घरु २२४
गिरि कौ महातमु अब मैं जान्यों ६७६
गिरि गोवर्द्धन पूजत तात ६५८
गिरिधर लाडिलौ लड़बौरा ४२६
गिरिधरलाल बैठे हैं बाजी ११८०
गिरिधर सबही अँग कौ बाँकौ ५५४
गिरिधर हटरी भली बनाई ६५१
गिरि पर चढ़ि गिरिवर–धर टेरें २६५
गुपति मते की कहति कहौ १०६०
गेंदा गिनती के हैं नीके १२८३
गोकुल के लोग बड़े बड़भागी १३६७
गोकुल बैठौ कान्ह मथुरा ८४४
गोकुल में आजु कुलाहल माई ! ६३
गोकुल में बाजत कहाँ बधाई ५
गोकुल सब गोपाल–उपासी १०६६
गोधन चारत मदनगोपाल २७७
गोधन पूजहिं गोधन गावहिं ६५५
गोधन पूजिकें घरु आए ६६१
गोवर्द्धन धरनी धर्‌यौ मेरे बारे ६८१
गोवर्द्धन नख पर धर्‌यौ ६८०
गोवर्द्धन पूजत परम उदार ६५६
गोवर्द्धन पूजिहैं हम आइ ६५७
गोपाल की आवनी तुम देखहु ३६६
गोपाल जू की सब कोउ करत ८५०
गोपाल ! तेरी मुरली हौं मारी ५२२
गोपाल दिखाई दै–दै जात ५१४
गोपाल न आए मेरी माई ! १००६
गोपाल निपट हैं भोरे १६५
गोपाल फिराबत हैं बंगी २३६
गोपाल बटाउ की सी रीति १०६५
गोपाल बिनु कैसें कें ब्रज ६५७
गोपाल–मनाये की चाहति बाट ७५४
गोपाल माई ! कानन चले २७२
गोपाल माई ! खेलत हैं २३४
गोपाल माई ! खेलत हैं चौगान २३५
गोपाल माई ! माँगत हैं ८१
गोपाललाल सौं नीके खेली ७७०
गोपाल सों मेरौ मन मान्यौं ४१०
गोपालहिं कैसै कै लै आऊँ ६६३
गोपालहिं प्रेम–उमगि बोलत ३१३
गोपालहिं पठै देहु हौं देखौं १०७८
गोपालहिं मधुबन जिनि लै जाहु ८५५
गोपालहिं माँखनु खान दै २२०
गोपालहिं लै आवहु मनाइ ११२२
गोपालै जू माँगनि पठए भात ५६२
गोपालै बेध करन कौ कीजै ७१
गोपी गोविंद–गुन विमल १२६७
गोपिनि की सरभर कौन करै १३७३
गोपी प्रेम की ध्वजा ८०३
गोविंद ग्वालिनि ढौरी लाई ४६५
गोविंद गोकुल की जीवनि १११०
गोविंद ! गोकुल की सुधि ११२४
गोविंद ! गोकुल चलौ जहाँ ११५१

गोविंद चलत देखियत नीके २६६
गोविंद ! तुम जु चलत कौन ८५७
गोविंद तुम्हारौ सुरूप निगम १३१२
गोविंद ! तेरी गाँइ अति बाठी ३६६
गोविंद दधि न बिलोवनि देहि १३६
गोविंद प्यारे बिनु कौन हरै ६६६
गोबिंद प्रीति कै बस कीनौं ८०७
गोविंद फेरि गो–रस माटु १०१६
गोविंद बार–बार मुख जोबै १४०
गोबिंद बीचु दै सरमारी ६०१
गोविंद मधुपुरी कत जातौ ६४३
गोबिंद ! सोई दिन नीकौ ११४६
गो–रस कहा दिखावनि आई १६०
गो–रस बेचत ही ठगी ६३२
गो–रस बेचिबे मँहि भाँति ६२६
गो–रस राधिका लै डगरी ६२७
गंगा तीन लोक–उद्धारक १२४६
गंगा पतितनि कौं सुख–दैनी १२५०

(घ)

घन मँहि छुपि रही ज्यों दामिनि ८०१
घर–घर ग्वाल देत हैं हेरी ४
घरी एक छाँडहु तात ! बिहारी ६५०
घाट पर ठाडे मदनगोपाल ११२
घुंघुरू बाजत झनक–झनक १२२७

(च)

चतुर नारि नागर नायक ११६६
चरनकमल बंदौं जगदीस १२६६
चलत हूँ न कान्ह कह्यौ रहनौं ८८१
चलत हूँ न देखनि पाए लाल ८८२
चलहु तौ ब्रज में जइये १५६
चले हरि बच्छ चरावनि माई २७८
चलहि किनि देखनि कुंज–कुटी ७०४
चलहु राम ! जईये ब्रज–वास ११५०
चलि तू मदनगोपाल बुलाई ७४८
चलि राधा ! तोकौं स्याम बुलाबै ११६४
चलि री ! ग्वालि तोहि बोलत ७०७
चलि री ! नंदगाँउ जाइ बसिए ४७७
चलि री मदनगोपाल बुलावै ७०५
चलि लै मिलऊँ मदनगोपालहिं ७०६
चलि सखि ! कुंज गोपाल जहाँ ७०८
चलि सखि ! देखनि नंदकिसोर १२६५
चलि उठि कुंजभवन तें मोर ! ८२४
चले ब्रज तें गो–चारन गोप २६७
चलो भैया ! आनंदराइ पें जैये २०
चलौ लाल ! मेरें कीजै आइ ४००
चलौ सकल मिलि खेलिये १२०३
चहुँ दिसि हरित भूमि बन माँहि ३०८
चातक पीउ–पीउ बोलत ६६३
चारु कपोलनि की झलक ५३६
चित कौ चोर अबहिं जो पाऊँ ४११
चित न चलै चरननि तें माई ! ४२१
चितवनि प्रीति की पहिचानी ६६६
चितै–चितै चित चोर्‍यो री माई ! ४५१
चितै धौं हरि के बदन की ओर ११६
चितैबौ छांडि दै नेंकु राधा ! ४६७
चिरजियौ लाल गोवर्द्धनधारी ६७०
चंदन पहिरि देखि चित चोर्‍यौ १२४१
चंदन पहिरें लाल ललित तन १२४०
चंदन पहिर्‍यौ ऊजरौ अंगनि १२४२
चंद मैं देख्यो मोर मुकुट कौ ४८६

(छ)

छकहारी री ! चार–पाँचक आवति २६८
छबीली भौंहैं तेरी स्याम–मनोहर ५७०
छाक खात गोवर्द्धन–ऊपर ३०५
छाक लै जाहु री मेरी माई ! २८३
छाँडहु मेरे अँचरा कान्ह ! ५६८
छाँडहु मेरे ललन ! अजहुँ १४८
छाँड़हु लाल ! हमारी बाट ५६४
छाँडि न देति झूठौ अति अभिमान ७०६
छूटी री ! अलक–लट काहे ८२८

(ज)

जइए वह देस जहाँ नँदनंदन ४८८
जकि रही सुनि मुरली की टेर ४३७
जतिया चारे के नाँते दिन दस १०५३
जद्यपि पाई राजधानी ११५६
जदपि हौं बाबरी गँवारि ६३०
जद्यपि करि जानति हौं मानु ४६०
जनम–दिवस की बानिक हेली ३३
जनमत ही आनंद भयौ ८
जनम–फल मानति जसोदा माई १००
जनम लियौ सुभ लगुन विचारि ६
जब कर बेंनु गहत ३४७
जब गोविंद कृपा करै तब १३०३
जब तुम रहते ग्वालनि साथ ११४६
जब तें प्रीति स्याम सौं कीनी ४१७
जब तें ग्वालिनि ! तू ब्रज आई १८६
जब नँदलाल नैंन भरि देखे ४७६
जब लगि जमुना गाइ गोवर्द्धन १३७०
जबहिं सारँग लै हैं रघुनाथ १२३२
जमुना की आस अब करत हैं १३८३
जमुना के साथ अब फिरत हैं १३८२
जमुना–जल–घट भरि चली २४६
जमुना तुम्हारे बाँट परी २१५
जमुना नदिया के तट २४६
जमुने पिय कौं बस तुम जो १३८१
जमुने सुखकारिनी प्रानपति के १३८४
जवारे जग–मोहन के माथें ११८२
जवारे बाबा मोहि पहिरायौ ११८१
जसुमति–गृह आवति गोपी–जन १२२
जसुमति–जीवन नंदलाल–सँग ७६७
जसुमति ठाडी यों जु कहै १७८
जसुमति तुम्हारौ घर सुबसु बसौ ८६
जसुमति थार साजिकें बैठी मोहन ६८७
जसुमति रानी खीर खबाबत ६८
जसोदा आपुन मंगल गावै २६
जसोदा ! इह कौनें ढँग लायौ १६७
जसोदा ! एक बोल हौं पाऊँ ३३१
जसोदा ! चंचल तेरौ पूत १६०
जसोदा ! तेरे भागि की कही ४५
जसोदा ! तेरौ री बाल–गोपाल १६५
जसोदा–नंदनँदन आवै हरि–रूप ३६०
जसोदा पैंडे–पैंडे डोलै ३१४
जसोदा ! बड़ौ घरानौ तेरौ १८०
जसोदा ! बदन जोवै बार–बार ५५८
जसोदा ! बरजति काहे न माई ! १६२
जसोदा ! मधुवन तें आजु–कालि ६७३
जयोदा ! मांखन देहु उधारौ २२६
जसोदा ! रथ देखनि कौं आई १२५७
जसोदा ! सोवन फूलें फूली ६

जहँ जहँ चरन–कमल माधौ के ४३२
जहाँ गगन–गति गरगु कह्यौ ६७२
जाऊँगी वृंदावन भेंटोंगी गोपाल ४६२
जा के पति माधौ सो काहे न ११४७
जा के भवन लच्छमी देवी १०१५
जाके मन बसै स्याम–घन माधौ १३१६
जा कौं कृपा कटाच्छ करैं १३३४
जा कौं तुम अंगीकार कियौ १३०६
जाकौं माधौ करै सहाइ १३०८
जागे जग–जीवन जग–नाइक ६६२
जागौ मेरे लाल ! जगत–उजियारे ७७
जा दिन तें आँगन खेलत ४५३
जा दिन तें सुंदर–बदन निहार्‌यौ ४०४
जानकी देहु हमारे जाननि १२३१
जानि दै कमलनयन पें आजु ५६३
जानिऽब लावहु जिनि दोस १८२
जाकी कान्ह पुरातन जोरी ८६०
जानी है क्यों छिपिहै चोरी २१०
जापर कमला–कंत ढरै १३३६
जाहि बिसंभरु दाहिनौ सो काहे १३१६
जित देखों तित कृष्ण–मनोहर ४७८
जिनि गोपालहि जानि दैहि ८८७
जिय की बात न जानत हौ ४६०
जिय की साध जिय ही रही ८८३
जिहिं तें रस रहै रसिक कुँवर ७७५
जीत्यो वे जीत्यो नँदनंदन ब्योम ८७८
जे जन गंगा–गंगा रटें १२४८
जेंऔ मेरे कुँवर कन्हाई ! ३२६
जै जै श्रीराधा–पद–पंकज ५८५
जैंबत नंद गोपाल खिझावत ३२०
जेंबत राम–कृष्ण दोउ भैया ३२४
जैंबौ दूल्है–लाल–दुल्हैया १५४
जैंसी तुमऽब कहत तैसी कौन ११००
जैसी प्रीति गोपाल कें तैसी ७२३
जै श्रीबल्लभदेव धनी १२३६
जो जन हिरदै नाउँ धरै १३५६
जो तू नंदगाउँ दिसि जैहै ५५७
जो पें कोऊ माधौ सों कहै ५६८
जो पै श्रीनंदनँदन–गुन गाउँ १३५८
जोवन काहे कोंऽब गयौ ६०३
जो रसु रसिक कीर–मुनि गायौ ५४६

(झ)

झुलावति पलना महरि–सुत ४३
झूठौ दोस गोपालहिं लावति १८७
झूलत नवल किसोर–किसोरी १२१४
झूलौ पालने हो लालन ! लेहुँ ४१

(ट)

टूटि परी मोतिनि की माला ७७६

(ठ)

ठाढी बूझति नैन बिसालै २००
ठाढोई देखौं जमुना–घाट २४८
ठाडौ एहि चितचोर कन्हाई ४८४
ठाडौ कुंज–भुवन ५७५

(ड)

डगरि चलि गोवर्द्धन की बाट ५११
डला भारी कैसे कै उठाऊँ ३०३
डोल चंदन कौ झूलत हलधर १२१५
डोल झूलत नँदनंदन छिरकत १२१७
डोल माई ! झूलत हैं ब्रजनाथ १२१३

(ढ)

ढोटा कौन कौ मनमोहनु ! ३८७
ढोटा कौन कौ है री ! ५३३
ढोटा रंचकु माखन खायौ १९४

(त)

तनक कनक की दोहनी दै ३८१
तन–मन जुगल नयन पर वारौं १३४६
तनु विष गयौ है छहरि ५०६
तब उहि कृपा प्रीति अधिकाई ६२६
तब जु पलटि लेते बसन १०५५
तब हरि बतियनि ही सुख देते ६७७
तरनि–तनया के तीर गोपाल ७२१
तरुन घनस्याम तन बसन ७५१
तहाँई अटक जहाँ प्रीति नई ८८८
ता तें गोविंद–नाम लौं गुन गायौ १३६६
ता तें दसधा भक्ति भली १३३३
ता तें ना कछु माँगिहौं रहौं १३३१
ता तें माई ! भवन छाँडि बन ४५०
ता तें मोहि तुम्हारौ भरोसौ आवै १३१०
ता दिन तें उहाँई मन मोर ४७५
ता दिन तें मोहि अधिक चटपटी ४१६
ता दिन सरबसु देऊँ बधाई ६६४
ता बिनु बीतत कठिन दिनाँ ६०५
तिहारे बदन के हौं रूप–राची ५१६
तिहारी बात मोहि भावति लाल ५२०
तुम आवौ री ! तुम आवौ १२०४
तुम कौं टेरि–टेरि हौं हारी २६७
तुम चलि जाहु गोकुल हीं रामु ११५२
तुम जावौ लावौ बीरी कौन ३३७
तुम जु मनावति सोह दिन १०७
तुम तजि कौन नृपति पें जाँऊ १३२१
तुम तजि कौन सनेही कीजै १३२७
तुम देखौ माई ! सुंदरता कौ ५६४
तुम पै ऐसी कौन करावत २१४
तुम पें कौन दुहाबत गैयाँ ३६२
तुम बनमाली हो बनवासी ६०३
तुम मेरी दोहनी दुराई ३८५
तुम मेरी मोतिनि लर क्यों तोरी २३१
तुम सँग खेलत लर गई टूटि २३०
तुमहिं जो चाहति कानन डोली ५१७
तुम्हारे खरिक बताई हो ! ३६५
तुम्हारे चरनकमल कौ महातम १३४१
तुम्हारौ भजन सब ही कौ १३६४
तुम्हारे लाल ! रूप पर हौं ११५
तू को री ! हौं हरि की दूती ७११
तू जमुना गोपालहि भावै १३७६
तू जिनि जाइ नंद के द्वारें ५०७
तू राधे ! नट नवल नागरी २५१
तू हि मनाइ लेहि लाल प्यारौ ६६८
ते दिन चलि गए मेरी माई ६२५
ते भुज माधौ कहाँ दुराए १३२०
तेरी बाट हरि ! अबलौं चाही ७१४
तेरी लाल ! लागहु मोहि बलाइ ११३
तेरी लाल ! लेऊँगी बलैयाँ २०६
तेरी सौं कान्ह अबहिं आवति ६१०
तेरी सौं कै अपने बाबा की ७३४
तेरे पैयाँ लागूँ गिरिधर ! ३२३
तेरे लालन सौं कहा कहौ २५५
तेरे लाल मेरौ माखनु खायौ १७२
तेरौ कान्ह कौनैऽब ढँग लाग्यौ १६४
तेरो कान्ह सौ मन लाग्यौ ४६८

तेरौ गोपाल रन–सूरौ २५७
तेरौ ज्यौ बसत गोविंदे पहियाँ ७३१
तेरौ नाउँ लै–लै गावै तू चलि ७४६
तेरौ मुख नीकौ कै मेरौ री प्यारी ७६५
तैं इहि बालक सुत करि पाल्यौ ८५२
तैं मेरी लाज गँवाई हो दिखा ५१८
तैं मेरौ भाँवतौ न कीनौ ७६०
तो तें लाल कनाबडे ७२२
तो सी त्रिया नाहिंन भुवन भटू री ७४३
तो सौं कहा कहौं सुंदरघन ४६२
तोहि मनावत हौं हारी ७२८
तौ तोहि जानोंगी जान १०२२
तौ संभवैं सरीर होइ जो मिलिबे १०५७

(द)

दधिकादौ आँगन नंद के १६
दधि मथति ग्वालि गरबीली १३६
दधि–मथन करै नंद–रानी हो १३२
दधि लै आऊँगी उठि भोर ६१८
दधि–सुत–बदनी ओप–भरी ७५६
दसहरा पूज्यो री ! नँदलाल ११८३
दानघाटी छाक आई गोकुल २६२
दिन चारि आइबौ पहिले हू ६२७
दिन च्यारि आइबौ मनभावन १०८७
दिन–दिन तोरन लागे नातौ ६१३
दिवस दस रहि चलिये हरिदास ११०२
दीप–दान दीपाबलि देखौ ६५२
दुरि–दुरि देखत मैया १३७
दुहि–दुहि ल्यावति धौरी गैया ३०६
दूध पियौ मनमोहन प्यारे ! ४०२
दूध–पीवत भरि कनक–कटोरा ४०३
देखत ब्रजनाथ–वदन मदन ५३२
देखि गोपाल की आवनी ३६७
देखि गोपाल की लीला ठाटी १३१
देखि गोपाल कौ तमासौ ८७१
देखि धौं री कान्ह कहाँ हैं ३१५
देखि मुख ठाढी ये हँसै ३६३
देखि री रोहिनी मैया ! २४३
देखि सखी ! मोहन–मुख ७३७
देखौ इनि वदरिन की बरियाई ६८६
देखौं को मन राखि सकै री ४७२
देखौ जू ! स्याम बादर की उत १२६२
देखौ ढरकनि नवरँग पाग की ५७६
देखौ माई ! कान्ह बटाउ से ८६१
देखौ माई ! गोविंद अपने रस ८६८
देखौ माई ! चहुँ दिसि छाए १२६३
देखौ माई ! मदनगोपाल बने ३७४
देखौ माई ! रथ चढ़ि जादौपति १२५५
देखौ माई ! रथ बैठे गिरिधारी १२५३
देखौ माई ! रथ बैठे गोपाल १२५६
देखौ या ब्रज कौ चलनु १६०
देख्यौ री ! कहुँ नंदकिसोरा ६४१
देव–काज करन कौं प्रगटे ११७०
देव जगावति जसोदा रानी बहु ६६१
देव दिवारी सुभ एकादसी ६६०
दै ब्रजनाथ ! हमारी आँगी ५८७
दोउ कर चोंखनी मुख चोंखत १२४
दोउ नैननि तें तैं लागौ ५०६

(ध)

धन–तेरस रानी धन धोवति ६४२
धन्य–धन्य वृंदावन–वासी १३७२

धनि इहि कूख जनमु जहाँ ६७५
धनि ए राधिका–वर चरन ५८१

(न)

नगर में बाजति कहाँ बधाई ५१
न गहौ कान्ह ! कोमल मेरी ५६७
न जैहौं माई ! बेचनि दह्यौ ६३४
नटवर–भेष धर्‌यौ छवि आछें २४६
नयनाँ रहट की घरी रहाइँ ६६७
नवरँग कंचुकी तन गाढ़ी ७८६
नवल बसंत नवल बृंदावन ११६६
नहिं बिसरति वह रति ब्रजनाथ ६५१
नाचत हम गोपाल भरोसें १३०४
नाहिंन गोकुल–वास हमारौ १२६
निर्तत मोहन रास–विलास ७८४
निर्तत मंडल–मधि नँदलाल ७८१
निंदक मारिए त्रासु कीजै ८६४
नींद तोहि बेचौं सारी जो १०२५
नींद तौ ताहि परै जाहि लाल १००२
नीकी बानिक नवल कुंज की ८१४
नीकी हो खेली गोपाल की ६४६
नीकौ बन देखहु मदनगोपाल ५२८
नीकौ मथुरा नगरु ८८०
नेंकु इहाँ रहौ ढोटा देहु ४६१
नेंकु गोपाल कौं बरजि १६३
नेंकु गोपाल ! टेकहु मेरी बहियाँ २४५
नेंकु गोपालहि दीजहु टेरि ३१२
नेंकु तू मटुकी धरहि उतारि ६२४
नेंकु पटै गिरिधर कों मैया २२५
नैन की चाहनि मुख की ५७२
नैन की सैन चले दै कानन ४१४
नैंननि कौ टकुझकु तेरौ ५०५
नैननि तें न्यारे जिनि टरौ ४८५
नैंन भरि कबहुँ न देखनि पाए १०२३
नौमी के दिन नौवत बाजै १२२५
नंद कौ लाडिलौ लला २१३
नंद कौ लाल झूलत पलना ४४
नंदकुँवर खेलत राधा–सँग १२०७
नंद–गृह बाजति आज बधाई १६
नंद–गोवर्द्धन पूजहु आजु ६५३
नंद–घर आए गरग मुनि ज्ञानी ६४
नंद जू के ढोटा हौं भारी ६३६
नंदजू के लालन की छबि ६५
नंद ढिठौना पर हौं बारी २५०
नंद ! तुम्हारें आयो पूत २५
नंद निहोरौ बहुत कियौ ११४३
नंदनंदन जिय–भाँवते तेरे ५४८
नंदनंदन दान निबेरतु री ६२६
नंद बधाई दीजै ग्वालनि ३
नंद–भवन में अब ही देखा ३८
नंद–महोच्छौ हो बड कीजै १५
नंदमहर कें ढोटा जायौ २६
नंदलाल की बंदसि नीकी ७०१
नँदलाल माई ! गुपति चलावति ८१०

(प)

पढौ भैया ! राम गोविंद मुरारी १२४६
पतियाँ बाँचे हू न आवै १०८०
पथिक इहिं पंथ न कोऊ आवै ६०७
पद्‌म धर्‌यौ जिन ताप–निवारन १३१८
परदेसी कौ नेह सखी री ! ६३७
परमेस्वरी देव–मुनि–वंदित १२५१

परोसति पाहुँनी त्यौं नारी ३१८
पलना झूलत बाल–गोपाल ४०
पलना झूलति लली वृषभानु की ५५
पवित्रा–उच्छव कौ दिन आयौ १२८०
पवित्रा पहिरत राजकुमार १२८६
पवित्रा पहिरत श्रीमहाराज १२८७
पवित्रा पहिरें श्रीगिरिधरलाल १२८५
पवित्रा पहिरें श्रीगिरिवरधारी १२८०
पवित्रा लाल के कंठ सोहै १२८२
प्रगट भए हरि श्रीगोकुल में १४
प्रगटे मोहन मंगल माई १३
प्रगटी वृषभानु–गृह लली ५२
प्रगट्यौ सब ब्रज कौ सिंगार ४६
प्रथम कृपा करि सोखी आँखिनि ६४६
प्रथम गो–चारन चले कन्हाई २६५
प्रथम सनेह कठिन मेरी माई ३८६
प्रथमै खीर खवाई गोकुलचंदा ६६
प्रात समय उठि करिये श्रीलछमन १२३५
प्रात समय उठि चलहु नंद–गृह ८८
प्रात समय उठि जसुमति दधि १३४
प्रात समय उठि हरि–नाँउ लीजै १३५६
प्रात समय गावति नँद–रानी १३३
प्रात समय भयौ राजीव–लोचन ७३
प्रात समय भयौ साँवलिया हो ७५
प्रान–जीवन जदुराई ! मिलिहौ ६६५
प्यारी के द्रगनि पर भँवर–नगनि ५८३
प्यारी ! तू न करि गहरु कंचुकी ७१७
पाँडे भोग लगाइ न पावै १०२
पिछौरा खासा कौ कटि बाँधें ३६२
पिछौंडी बोंहनि दैहों दान ६१६
पिय बिनु लागति बूँद करारी १२६१
पिय मुख देखत ही पै रहिये ४४७
पीतांबर कौ चोलना पहिरौंगौ ५७३
प्रीतम तब जु बेंनी गुहत १०५६
प्रीति तौ एक हि ठौर भली ४५५
प्रीति तौ कमल–नयन सों १३०२
प्रीति पुरानी जिनिऽब करहु १०६८
प्रीति माई ! बिनु भएँ बरु रहती ६००
पुरोहित आयौ नृप के द्वारे १०३
पूछति है खग–मृग द्रुम–बेली ३३७
पूजहु साध नंद मेरे मन की १४५
पून्यों चंद्र देखि मृग–नैनी माधौ १००४
पूरन मास पूरन तिथि गिरिधर १२५२
प्रेम की पीर सरीर न माई ४४६
पैयाँ तेरे लागौ पंथी मेरे बीर १०२१
पौंछत कान्ह गाँइ की पीठि ३८८
पौढे रावरी सुख–सेज ८२२
पौढे रंगमहल गोविंद ८२०
पौढे हरि झीनौ पट दै ओट ८२१

(फ)

फिरि पछिताहुगी राधा ११६३
फिरि–फिरि कहा हेरति है री ५०४
फूल के अठखंभा राजत सँग १२१६
फूल गही वृषभानु–दुलारी ५६०
फूलनि की चोली फूलनि कौ १२१८

(ब)

बृंदावन काहे कों भूल्यौ रामु ! ११५७
बृंदावन क्यों न भए हम मोर १३७५
बडी है कमलापति की ओट १३२४
बदन की बलि जाऊँ बोलत ५४२
बदन–छबि मानहुँ चंद बियौ ५८०

बदन–मुकुंद–देखि–देखि जीवति ८६०
बदरिया ! तू कत ब्रज पर घोरी १०२६
बदन निहारति है नँदरानी १११
बन तें आवत हैं मेरी माई ! ३६५
बन तें नव रँग गिरिधर आवत ३६८
बन–बन माधौ की डोलनि ५१२
बने बन आवत मदनगोपाल ३७२
बने माधौ जू के महल १३७६
बन्यौ आली ! माधौ सौ सनेहरा ४४५
बन्यौ बागौ बामना चंदन कौ १२३६
बन्यौ रासमंडल में माधौ गति में ७६६
बन्यौ री गोपाल बाल–रस आवै ३५८
बन्यौ लालन रसिक राधे ! ७७८
ब्रज के विरही लोग बिचारे ११४२
ब्रज की औरै रीति भई १०२४
ब्रज की बीथी निपट साँकरी २५२
ब्रज–जन देखें ही जियत ८५३
ब्रज तें बन कौ चलत कन्हैया २७४
ब्रज–पुर घर–घर अति आनंद ६१
ब्रज–पुर बाजत सबहिनि के घर ६५६
ब्रज में काछनि बेचनि आई १४२
ब्रज में फूले फिरत अहीर २१
ब्रज में बाजति आज बधाई १७
ब्रज है बातें पैं रही ६१०
ब्रज में होत कुलाहल भारी १८
ब्रजबासी जानें रस–रीति १३६८
बरखन दै री ! बरखन दै ! हमारे ६६३
बरजति काहे तें नहीं १७०
बरजहु अपुनौ ललनु ६४०
बरजौ या चंद मंद किरनि–पुंज ६७६
बरसनि लाग्यौ बूँदनि चहुँ दिसि १२५६
बरसाने वृषभानु–कुँवरि को तेल १५३
बरसि रे सुहाए मेहा जौ पैं हरि १२५८
बलि के द्वारें ठाढे वामन ११७२
बलि गई मेरी गाँइ दुहि दीजै ३८३
बलि गई स्याम–मनोहर गात ३१०
बलि–बलि माधव–स्याम–सरीर १३२३
बलि राजा कौं पताल पठायौ ११७३
बलि राजा कौ समर्पन साँचौ ११६६
बलि राजा है मन कौ मोटौ ११७४
बलिहारी पद–कमल की जिनि १३००
बहुत उपजति है या ढोटा पै १७५
बहुत गुन मानौंगी हौं तेरौ १०६२
बहुत दिन बीते नंदकुमार १०६६
बहुत दिन समाचार नहिं पाए ११६१
बहुत दिवस भए देखें बिनु लाल ! १११८
बहुत रही समझाइ मनायौ मानत ७५७
बहुतै देबी बहुतै देवा कौन–कौन १३११
बहुरि कालीदह काली आयौ १०७२
बहुरि वे दिवस कहाँ मेरी माई ६३६
बहुरि हरि आवहुगे किहिं काम ६८३
बहुरौं ब्रज कौ नाम न लीनौ ६५५
बाँटि–बाँटि बनचरन्ह कौं देत २८७
बात कहत रस–रंग उछलता १२२०
बातनि लाई री लाइ ५३१
बातनि सब कोऊ समुझावै १०६४
बातें कहत बनाइ–बनाइ १०४८
बाबा की सौं कै उनकी सौं ६६६
बाबा जू मोहि दोहन सिखाऊ ३८२
ब्याकुल बार न बाँधति छूटे ६६८
ब्याह की बात चलावन आए १४७
ब्याह की बात चलावति मैया १४६

बारक गोकुल–तन–मन कीबौ १०६७
बारक बदन दिखाइ कें मोहन १०८५
बार–बार समुझाबनि लागे ६५४
बाल–दसा कर पर लियौ मेरे ६८५
बाल–दसा गोविंद की सब काहू ४३
बाल–विनोद खरे जिय भावत ४८
बाल–विनोद गोपाल के देखत ६७
बाल–विनोद भावती लीला १३०
बाँसुरी बजावत गोविंद नाचत ३४३
बाँह डुलावति आवति राधा ८२६
बिधाता ! करहु हमारौ भावतौ ८६५
बिधिना विधि करी बिपरीत ८८५
बिनती सुनहु जसोदा रानी ३६०
बिफरि गई धूमरि अरु कारी आपु ६४४
बिमल जस वृंदावन के चंद कौ ११०
बियारू करत हैं बलवीर ४०१
बिरचि मन बहुरि न राचत आहि ११२६
बिरह विनु नहीं प्रीति कौ खोज १०१८
बिहरत वृंदावन गोविंद ५७४
बिहारीलाल आऔ आई है छाक ३०२
बीरी अरोगत गिरिधरलाल ३३६
बूझनि लागे गोप गोवर्द्धन क्यों ६७४
बूँदनि झर लाग्यौ आँगन में १२६०
बेगि चलौ उनि देखिये बैठे सिंह ११८४
बेगि न सिंधु बाँधहु राधौ ! १२३४
बेधी हौं पद–अंबुज–मूल ६७२
बैठे घनस्याम सुंदर खेवत हैं ७८७
बैठे पहिरि पवित्रा दोऊ निरखत १२८४
बैठे लाल कालिंदी के तीरा ६६७
बैठि रही राधे ! सकुमारी ५८६
बोलति स्याम जसोदा मैया ३१६
बोलन लागे मईया ! मईया ६२
बोलि बोलि रे बंस सुजाती १००५
बोले माई ! गोवर्द्धन पर मुरवा ८०६
बंदसि बनी कमल–दल–लोचन ५४०
बंस सुद्ध जो मुरुली पाई ३४६

(भ)

भए हैं पहार से दिना १०१७
भक्त–बछल गोपाल दयानिधि ११७१
भयौ पाछिलौ पहर ७४
भली इहि खेलिबे की बानि १७७
भली करी जु आए हौ सवारे ८३४
भली बनी वृषभानुनंदिनी प्रात ८३१
भलै आए गिरिवरधारी नागर ८३६
भाजि गयौ मेरौ भाजनि फोरि १७६
भादौं की रयनि अँधियारी ७
भावैं मोहि माधौ की आवनि ३५३
भावै मोहि माधौ बेनु बजावनि ३४१
भावै हरि के बाल–बिनोद ६३
भावति है बन–बन की डोलनि २८६
भैया हो ! आजु बनी गोपाल– ३७०
भोजन करत हैं गोपाल ३२२
भोजन करि उठे दोउ भैया ३३४
भोजन कीनों री ! गिरवरधर २६३
भोजन कों बोलति महतारी ३१७
भोजन भली भाँति हरि कीनौ ३२८
भोर ही ठानत हौ नित झगरौ ६१४

(म)

मधवा कौन कहाँ कौ ईस ६७८
मटुकिया लै जु उतारि धरी ६१२

मति गिरि गिरै गोपाल के कर ६८४
मथुरा काहे कौं हौं आऊँ १०५४
मथुरा देखिबे की साध १०६८
मथुरा देखिए नँदनंदनु ८६५
मथुरानाथ सौं बिगारी ८७७
मथुरा रमि रह्यौ नँदनंदनु १११२
मथुरा हूँ धेनु चरावत हैं १०५२
मदनगोपाल के रँगराती ४५६
मदनगोपाल झूलत डोल १२१२
मदनगोपाल देखि री माई ५३७
मदनगोपाल बलैया लैहौं ५१६
मदनगोपाल हमारे उनकें किहि १०४३
मदनगोपाल हमारे राम १३०६
मदन–महोच्छव आजु राधे ! ११६७
मधुकर ! खेद करै कत कोई १११४
मधुकर ! छुहौ जिनि चरन हमारे ४७७
मधुकर ! स्याम हमारे चोर ११३३
मधुप ! काहे कों बार–बार और ११३०
मधुप ! बार–बार सुरति आवै १०८२
मधु माधौ नीकी रितु आई १०६१
मधुर–मधुर मुरली बन बाजै १२०१
मन जु पराएँ बस पर्‌यौ नैननि ४४६
मन में रमि रही ओइ बतियाँ ६६२
मनि–मै आँगन नंद के खेलत ६१
मन हरि लै गए नंदकुमारु ४१५
मन हर्‌यौ कमल–दल–नैना ४३४
मनावत हार परी री माई ! ७२६
महल में बैठे मदनगोपाल ८११
महाकाय गोवर्द्धन परबत एकहि ६६४
महाबल कीनों हो ब्रजनाथ ! ६६६
माई ! अब इहि सरद–निसा ६८०
माई ! आवत है नंदनँदन १६०
माई ! कमलनयन स्यामसुंदर ३४
माई ! को इहि गाँइ चरावै ६५६
माई ! को मिलिबै नंदकिसोरै ६६६
माई ! डार–डार पात–पात ७७२
माई ! तजि न सकौं सुंदर वर ५५५
माई ! दोइ कैसैं बनि आवति ६४६
माई ! प्रगट भए हैं राम १२२१
माई री ! अब तौ डरु लागत ६१५
माई री ! असित कुंतल मधुप ३६४
माई री ! करत हैं गो–दोहनु ३८४
माई री ! चंद लग्यौ दुख दैन १०२७
माई री ! नाहिंन दोस गोपालै ४०७
माई री ! बन–क्रीडा मोहि भावै ५१५
माई री ! मदन–बान मारि गए ६३६
माई री ! मधुवन केतिक दूरि ६८१
माई री ! माधौ बिनु कैसै सहौं ६६०
माई री ! मीठे हरि जू के बोलना ३७
माई री ! साँवरौ सौ ग्वाल–बाल ५६७
माई ! हरि प्रीतमु परदेस ११३५
माई ! हरि प्रीतम परदेस ६७०
माई ! हौं अपने गोपालहिं गाऊँ ४५६
माई ! हौं आनँद–गुन गाऊँ ७६
माई ! हौं कहा करौं न भावै ४६३
माई ! हौं लागी साँचे के पाछें १००७
माखन–चोर री मैं पायो २१८
माखन मोहि खवाइ री ! मैया ३२६
माँगै सुवासिनी द्वार–रुकाई १५५
मात जसोदा दह्यौ विलोवै १३५
माधौ ! आइबौ दिन च्यारि १०७५
माधौ ! इहि धर अधिक धरी १३२८

माधौ ! इहि प्रसाद हौं पाऊँ १३४४
माधौ ! इतनी दूरि टरि गए काल ६३२
माधौ जू ! ओइ औसर चलि ११६६
माधौ ! काहे कौ दिखाई अपनी ६१४
माधौ ! गोकुल अपुनौं गाउँ १०६३
माधौ चाचरि खेलें ही खेलें री ! ७८०
माधौ ! जानि जाहु ओइ बतियाँ १०५८
माधौ ! जानि दै चलि बाट ५६६
माधौ जू ! हमसौं तुम इहई ठई ६०७
माधौ ! तुम्हारी कृपा तें को १३२५
माधौ ! निबसत जमुना–कुंजं ५१३
माधौ ! परि गई लीक सही १३१५
माधौ ! भली जु करत मेरे द्वार ५२१
माधौ ! भलौ बन्यौ आवै देखत ३५७
माधौ माई ! मधुबन छाए ६६६
माधौ ! मिलन अजहूँ दूरि १००३
माधौ ! मुख देखे के मीत ६१७
माधौ ! राखहु अपनी ओट ६६२
माधौ सों कत तोरिये ८४५
माधौ ! संगति पोच हमारी १२३५
माधौ ! हम उरगानें लोग १३१३
मान तौ तासौं कीजै जोऽब ७००
मानहुँ नाहिंन प्रीति हियें ५२४
मानु इहाँइ लौं प्रीति ६५८
माननि ! एतौ मानु न कीजै ७३३
मानि री ! मानि मेरौ कह्यौ ७१०
मानौ माई ! सिंधु फिरयौ १२३०
मानौ या के बाबा की कोउ चेरी २६४
मारग माधव कौ जोवै ६५४
मारगु जात नेंकु फिरि चितयो ४८३
मिलन–हीन दुख पइयतु राम १११५
मुख बीरी राची हरि के रंग ३३८
मुगध मनाए की चाहति बाट ७५३
मुरली कुनित रंगे सुंदर–स्याम ३४२
मुरली कौऽब बजावनिहारौ ४५८
मूँगि रहै छाँडि अटपटी रारि १८६
मेरी सुरत्यौ गई ८६२
मेरे कान्ह कौ कछुअ न लागै १६७
मेरे गोपाल लडाइतौ १०८
मेरे छगन–मगन बारे कन्हैया १२५
मेरे जीवनि श्रीगिरिधारी १०८८
मेरे नंद कौ लाल जिय बस्यौ ४२६
मेरे मन गह्यौ माई मुरली कौ १०७१
मेरे माई ! इहै जतनु ४०८
मेरें माई ! हरि–नागर सौं नेह ४०६
मेरे ललना ! तुम ऊपर वारी १४१
मेरौ नेंकु न छाँडौ गोहना ३६८
मेरौ मन उहाँई चाह करै ६०२
मेरौ मन कान्ह हर्‌यौ ४३१
मेरौ मन गोविंद सौं मान्यौ तातें १०३८
मेरौ मन बाबरौ भयौ ४३०
मेरौ मन बिगर्‌यौ दुहुँ ओर ४३३
मेरौ मन हर्‌यौ री नागरु ११०५
मेरौ माई ! कौन कौ दधि चोरै १६३
मेरौ माई ! माधौ सौं मन मान्यौ ४२८
मैया ! अबहिं उराहनें आई २२१
मैया ! गाइँ चरावन जैहौं २६३
मैया ! भूषन अपने लै री ११२
मैया ! मेरी रही बाँह पिराइ ६८३
मैया ! मैं कैसी गांइ चराई २७३
मैया ! मोहि करि दै री ! पूआ ७०
मैया ! मोहि ऐसी दुलहिन भावै १५१

मैया ! या ही कौन निवारै १८१
मैं अपनों मन हरि सों जोर्‌यौ ४५२
मैं तुम देखे स्याम–मनोहर ८३६
मैं तू कै विरियाँ समुझाई ५०१
मैं तोसों केती बार कह्यौ ६३०
मैं तौ प्रीति स्याम सौं कीनी ४१६
मैं मन बहुत भाँति समुझायौ १३३७
मैं मन मोल गोपालहिं दीनों ४३६
मैं हरि तुम तैं कहा दुरायौ २०४
मैं हरि की मुरली बन पाई ४६८
मो तें कछु सेवा न भई १०६७
मो पर नैन घुरावति आवति १६२
मोपें हरि–बिनु रह्यौ न जाई ८६६
मो सौं तू काहें कौं लरति ७२०
मोहन उठतहिं रार मचाई १३८
मोहन कौ मुख देखत रही री ४४३
मोहन चढि कदंब पर टेरत २८१
मोहन जेंबत छाक सलौनी ३०१
मोहन ! तुम जु बडे के बेटा ५६६
मोहन नंद–गोप कौ चंचलु ६३१
मोहन नंदराइकुमार ५५३
मोहन ! नेंकु सुनाबहु गौरी ३७६
मोहन परदेस रह्यौ इहाँ इहि सूत १०७३
मोहन ब्रज कौ रतनु २५४
मोहन ! विसरि गई वह बानि १०६२
मोहन ! मानु मनायौ मेरौ २४१
मोहन–मुख की सुनहु द्वै बतियाँ ७३६
मोहन–मुख देखनि आउ री ६६६
मोहन–मुख दीखें सुख जीजै ११०३
मोहन मोहिनी पढि मेली ४७१
मोहन ! वह क्यों प्रीति बिसारी ४७
मोहि भावै देवाधिदेवा १३२२
मोहि मिलनि भावै जदुवीर की ७८६
मोहि लई रतनारे नैन ४८६
मोही री ! इनि नैंननि की सैन ४१३
मंगल आजु महामंगल घर ५८
मंगल आजु महोच्छव है ब्रज ५६
मंगल आरती करि मन मोर ८३
मंगल आरती करि मन मोर ८२
मंगल द्यौस छठी कौ आयौ ५७
मंगल माधौ नाम उचार १३५५

(य)

यह धन धर्म ही तें पायौ १२
यह व्रत माधौ प्रथमु लियौ १२४३
यह माँगौं गोपीजन–बल्लभ १३५०
यह माँगौं जसोदानंदन १३४६
यह माँगौं संकर्षन–वीर १३५१
यह सुनि बचन पिया पै आई ७६५
यातें जिय भावै सदा गोवर्द्धनधारी ६६६
यातें दिन आवति इहिं ओर ५००
या ब्रत तें कबहूँ न टरौं री ४७३
या मन कौ कहा करौं जो न रहै ६४४
या रस–बीधी दिन बन जाती ४१८
या हरि कौ संदेस न आयौ ६८८
या हरि तें औरु कौन बडैतौ ७३२

(र)

रच्छा बाँधति जसुदा मैया १२८८
रच्छा बाँधति जसोदा मैया १२६४
रच्छा बाँधति जसोदा मैया १२६५
रच्छा बंधन करत गरग गुरु १२६८

रतन–जटित कंचन–मनि–मै नंद ३६
रति–रन जीते ई आवत मदन ८३८
रथ चढि आवत गिरिधरलाल ११५४
रयनि पपीहा बोल्यो माई ६८५
रम पायौ नंदकुमार ८३०
रसिक–सिरोमनि नँदनंदन ५४७
रसिकिनि राधा पलना झूलै ५४
रसिक–सिरोमनि प्रेम–भगति–बस १३२६
रहि सखि ! बावरी तन छीजै ६६८
रहु बलि माधौ ! झगरौ न कीजै २४२
रहे गहि भामिनी की बाँह २३२
रहे री ग्वालि जोबन–मदमाती ११८
रहै–रहे रे ! जान्यो ग्यान तिहारौ ११२१
राखी बाँधत मदनगोपाल १२६६
राखी बाँधत श्रीगिरिधारी १२६७
राखी बंधन नंद कराई १२८६
राजति है बृषभानु–किसोरी ११६२
राधा बैठी तिलकु सँबारति ७८८
राधा ! माधौ कौ मुख नीकौ ७४५
राधा ! माधौ कुंज बुलावै ७०३
राधा ! माधौ बिनु क्यों रहै ७६२
राधा माधौ सों रति बाढी ७६१
राधा माधौ सँग खेली १२०५
राधा रसिक गोपालहिं भावै ७६०
राधा री ! तू मदन–कला ७१५
राधा सौं रस–रीति बढी ७६८
राधे ! इहि नीकौ है खेलु २२८
राधे ! कौन गौर तैं पूजी ५६१
राधे जू ! हारावलि टूटी ८२३
राधे ! तेरे भवन हौं आऊँ ५३०
राधे ! तू देखि बन के चैन ७३६
राधे ! तैं लोचन दूत किए ६६५
राधे ! बात सुनहि किनि मेरी ८३५
राधे ! बोलत नंदकिसोर ७४७
राधे ! हरि तेरौ बदनु सराह्यौ ७२४
रानी जू ! एक बचन मोहि दीजैं ३३०
रानी जू ! जायौ पूत सुलच्छिन ११
राम देखियत सुंदर गात १२२६
राम मुख देखत नैन आनंद १२२८
रावरि के गोप कहें आज ब्रज २३
रास रच्यौ बन कुँवर किसोरी ७८२
रितु बसंत के आगमें हो ! १२०२
री ग्वालिनि पिछवारे ह्वै बोल ८०
री ! माधौ के पाँइनि परिहौं ६६४
रुक्मिनी बूझति है गोपालहिं ११४८
रूसे ही रहोंगी हौंतौ रूसे ही ७६६
रे मन ! सुनि पुरान कहा कीनों १३४२
रंचक चाखनि दै री दह्यौ ६२०
रंग–रँगीली डलिया पठई छाक ३००

(ल)

लगै सखि बृंदावन कौ रंग १३७४
लटकि लाल रहे राधा के भर ७६६
लरिकई लौं रोई देत हैं जैसे १०४२
लरिकाई की प्रीति कहौ धौं १०६३
ललन उठाइ देहु मेरी गगरी २४७
लला रे ! नेंकु हमारें आउ ५२६
लला हो ! किनि ऐसे ढँग लायौ ६०६
ललित लाल श्रीगोपाल ! सोइए ७८
लागौ प्रीति कौ मोहिला हो ८७४
लाडिले ! जे जल जिनहिं पियौ ३४०
लाडिले ! बोलति है तोहि मैया ३६६

लाल आजु खेलत सुरँग खिलौना २४०
लाल की बरस–गाँठि है आज ३०
लाल कौ मुख देखनि हौं आई ८६
लाल कौ मीठी खीर जु भावै १४६
लाल कौ रच्छा–बंधन कीजै १२६३
लाल कौ सिंगार बनाबत मैया ११६७
लाल ! तुम कौन बिनोद कियौ ८६६
लाल ! तुम पीत ओढिनी कहाँ ८३७
लाल ! तेरी चलत ब्याह की बातें १५०
लाल ! तेरी लाडिली लडवौरी ८०६
लालन ! ऐसी बातें छाँडौ ६०८
लालन सँग खेलनि फागु चली १२६०
लाल ! नेंकु देखिये भवन हमारौ ५२७
लाल ! प्यारे ! तुम ऊपरि हौं वारी २११
लाल प्यारौ ! झूलत है संकेत १२६८
लाल बुलावत हे उहि तिरियाँ ६५०
लाल बैठे कुसुम फूली लटपटी ५६३
लाल विनोद है एक ठान्यों २६२
लाल ! यह निपट अगोचर गेहरौ ४६३
लिखि–लिखि पठवनि लागे जुहार १०६१
लियौ मेरे हाथ तै छिडाइ १६८
लेहु दही कान्ह ! लेहु दही ६१७
लेहु माई ! चरननि कौ चंदन ६२८
लै चलि ऊधौ अपने संग १०८३
लोभ की प्रीति दिवस द्वै–चारि १०६६

(व)

वह तौ कठिन नगर की बात ८५६
वह मुख कबहुँ दिखाबहुगे हरि ! ६५६
वह मुख देख्यौ ई मोहि भावै ३५६
बामन आए बलि पें माँगन ११६८
वारी मेरे लटकन पगु धरौ ३६
विजय सुदिन आनंद अधिक ११७६
विह्वल भई फिरति राधेजू ! २२४
वे दिन या देह अछित विधिनाँ ६३३
वे देखियतु मधुवन के रूख री १०३३
वे देखो बन धेनु चरावत दोऊ २७६
वे बात कमल–दल–नैन की ८६४
वे बातें जमुना–तीर की १०८६
वे हरिनी हरिनी बन जाईं ८४३

(श)

श्री जमुना इहै प्रसाद हौं पाऊँ १३७७
श्री जमुना गोपालहिं भावै १३७६
श्री जमुनाजी दीन जानि मोहिं १३७८
श्री नरसिंह भक्त भय भंजन १२४५
श्री रघुनाथ पालने झूलें कौसल्या १२२६
श्री राधाजू कौ जनम सुन्यो मेरी ४७
श्री बल्लभ गृह सदा बधाई ११८८
श्री बल्लभनंदन आनँदकंद ११८७
श्री बल्लभ रतन जतन करि १२३८

(स)

सखि ! ऐसौ रस कहाँ पाइबौ ७१६
सखि ! हौं अटकी इहि ठौर ४०६
सखी री ! अब चित कौन ६०८
सखी री ! कहि धौं गोपाल कब १०३२
सखी री ! कित ही है वह गाउँ १०३४
सखी री ! जीजति हौं मुख हेरें ४६६
सखी री ! ता दिन काजर देंहों ६०६
सखी री ! मिलबहु नंदकिसोर ४४०
सखी री ! लोभी मेरे नैन ४७०

सखी री ! सुंदर स्याम सलौना ५६२
सगत्यऽब लेऊंगौ राजधानी ८६२
सजनी री ! गावौ मंगलचार १५८
सब ग्वालिनि मिलि मंगल गायौ १२६०
सब गैयनि में धूमरि खेली ६४५
सब तें नंदराइ बडभागी २७
सब विधि मंगल नंद कौ लाल १२६
सब भाँति छबीली कान्ह की ५३६
सब सुख सोई लहै जाहि कान्ह ५८६
सबै मिलि मंगल गावहु माई २८
सयाने कब लगि होइहौ लाल २०२
सरबसु लै गए ब्रज खाली ३८६
सरद निसा ससि सोभा हरे–हरे ७८३
सरद–राति गोपाल लीला रही है १०११
सरस हिंडोरना माई ! झूलै १२७६
सराहत राधिका की बात ११३६
सहज प्रीति गोपालहिं भावै ११६१
साँची प्रीति भई इक ठौर ७६४
साँचौ दीवान है री मेरौ ११३०
साँवरे गोविंद नैन लोला ३६१
साँवरे भले हौ रति–नागर ८३३
साँवरे मनु हर्‌यौ हमारौ ४३८
साँवरौ बंदन देखि लुभानी ४६१
स्याम–अँग सोभित है तनियाँ ३७७
स्याम खरिक के द्वार करावत ६४७
स्याम जू की देखिवे की बार ७४६
स्याम ढिढोंना मोही री माई ! ६३८
स्यामलाल आऔ हो आई छाक २६४
स्याम सुनि हरित भूमि सुखकारी ३०७
स्यामसुंदर मोहि लागत प्यारौ १६६
स्यामाजू कौं स्याम मनाएँ ल्यावत ७६१
सिखवत केती रात गई ७३०
सिर धरैं पखौआ मोर के ५३४
सिला पखारहु भोजन कीजै २८५
सुआ पढावति सारँग नैनी ८४१
सुदामा कें माधौ आए ८७३
सुदामा मंदिर देखि डर्‌यौ ११६४
सुदिन सुमंगल जानि जसोदा ११७७
सुदिन सँवारौ सोधि कें लाल जू ६७
सुधि करत करति कमल–दल ८६३
सुनतहिं जिय धरि मुरि मुसिकानी ७०२
सुनहु सुनहु जसोदा माई ! १६६
सुनि जसुमति तेरौ कुँवर कन्हाई १७६
सुनि प्यारी के लाल बिहारी ! ११६८
सुनि मेरौ बचन छबीली राधा ७४२
सुनियति ब्रज मँहि ऐसी चालि ८५४
सुनि राधा एक बात भली ७१६
सुनि री जसोदा ! आजु कहूँ तै १२०
सुनि री सखी ! तेरौ दोसु नहीं ५१०
सुनि सखी ! जोवन–सिंधु लट्यौ ६२१
सुनि–सुनि आज सुदिन सुभ ३१
सुनि संकेत उठी हँसि प्यारी ७६३
सुनु ब्रजनाथ छाँडहु लरिकाई ६०१
सुनु सखि ! प्रीतम के संदेस १०४७
सुनु सुत एक कथा कहौं प्यारी १०६
सुबल पठाइ दियौ सुधि लैंन २६१
सुबल श्रीदामा कह्यौ सखनि ३३६
सुभग सेज पौढे श्रीबल्लभवर १२३७
सुरति आवै कल बेंनु की ६६०
सुरति आवै बदन की ६६१
सुरति करि डहकिऽब रोइ दियौ ३८७
सु रहौ ऊधौ तुम्हारी बसीठी १०७४

सुंदर गावत वेनु–गीत बनमाला ४६६
सुंदर ढोटा कौन कौ है सुंदर ५६८
सुंदरता की रासि साँवरौ ३५४
सुंदरता गोपालहिं सोहै ५३८
सुंदर बदन प्यारौ न्यारौ कैसै ५६५
सुंदर मुख की हौं बलि–बलि ५३५
सुंदर सब अँग स्याम–सरीर ६८२
सूची पढि दीन द्विज देवा ७२
सूधे क्यों न बोलौ कहा इतराने ६१६
सूधे मन मिलि रसिक सुजानै ७३५
सेवा मदनगोपाल की मुगति हू १३३८
सोई दिन सालति हैं छाती १०६०
सो गोविंद तुम्हारें ब्रज–बालक ६८
सोभा माई ! अब देखनि की बार ५६०
सोभा–सिंधु अनत रही री ५५०
सोभित नवकुंजनि छबि भारी ८१३
सोभित लाल लकुट कर राती २७५
सो राधा कें कंठ–भूषनु ५५२
सोहै सीस सुहावनों दिन–दूलह १५७
संग लरिकवन की जोटी २३८
संदेसनि क्यों निघटित दिन–रात ४६७
संदेसौ राधिका कौ लीजै ७५५
स्यंदन बैठि चलत जिहिं मारग ११४५
सँवारौ माधौ पहिले बोल ६३१

(ह)

हमकों विषम भई निसि सेजौ ६७४
हम तुम मिलि दोऊ खेलें होरी १२०८
हम तौ माधौ ! तुमहिं लगे ६४२
हम नँदनंदन–राज सुखारे ६६८
हम बनचारी कैसै बनें सगाई ११३४
हमरें गोकुल आनँद चानु २६१
हमें सरन तुम्हारे राखहु जू ६७१
हमहिं गोपाल सौं निज नातौ १०४६
हमारे अंतर की विरह–पीर १०३७
हमारे कोते चरनै हाथ घालिबौ ११११
हमारें माई ! इहै बहुत जो बात १०३६
हमारे हितकारी गोपालु ६८६
हरि–कथा कहि मधुकर प्यारे ! १०४६
हरि–कर–पल्लव लोल बिराजत ३४५
हरि की आवनी बनी ३५१
हरि की आनँद–केलि ३२३
हरि की मधुकर की सी न्याँई ६६१
हरि की मधुरी गावनि ३५०
हरि के भजन कौं कहा चहियत १२३६
हरि के भजन मँह सब बात १३६२
हरि कौं टेरति फिरति ग्वाली २८४
हरिजू कौ दरसन भयौ सबेरौ ४६४
हरि कौं भगत मानें डरु का कौ १३०५
हरि कौ भलौ मनाइये ३०४
हरि कौ मिलनु भयौ अब दूरि १०३१
हरि कौ विमल जस गावति ६०
हरि–गुन गावति चलीं जमुना ५८६
हरि–जसु गावत होइ सु होइ १३६१
हरिजू की बालक–लीला भावति ६६
हरि जू के की लीला काहे न १३६३
हरिजू आवनि की बलिहारी ३७१
हरिजू कौ नाम सदा सुखदाता ६१०
हरि तेरी भावती जु पहली ६२४
हरि ! तेरी लीला की सुधि आवति ६६५
हरि बिनु अब ऐसे दिनु आए ८६७
हरि बिनु बैरिनि रैनि बढी ६६७

हरि बिनु हार करहु हो हाँतौ १०००
हरि भए और के मिलनियाँ ६२३
हरि भोजन करत विनोद सौं ३२१
हरि मन औरहु ठौर धर्‌यो १०५१
हरि मारग जोवत भई साँझु ३५६
हरि मो सौं गमन की बात कही १०३०
हरि राखै ताहि डर का कौ १२४४
हरिहिं ल्याउ री भोजन करन ३१६
हरि–लीला गावति गोपी–जन ६६
हरि सौ एक–रस प्रीति रही री ! ४४८
ह्याँ तौ हरि की सी भाँति ४६६
हालरू हुलरावति माता ३५५
हिंडोरे झूलत गिरिवरधारी १२६६
हिंडोरे झूलत मोहन प्यारौ १२७४
हिंडोरे झूलत रँग–बोरे १२७२
हिंडोरें झूलति भामिनि १२६६
हिंडोरे झूलनि आई राधा के १२७०
हिंडोरे झूलै हो माई ! १२७८
हिंडोरे माई ! झूलत गोकुलचंद १२७३
हिंडोरे माई ! झूलत हैं गिरिधारी १२७१
हिंडोरे माई ! झूलैं श्रीमदनगोपाल १२७५
हिंडोरौ माई ! ब्रज के आँगन १२७६
है मोहिनी कछु मोहन पहियाँ ४८१
हो मोहन ! हौ हारी तुम जीते ५८८
हो हो होरी ! हलधर आवै १२१०
हौं अपने लाल की बलिहारी ५७१
हौं जानति री ! अपने पिय की १२३३
हों तकि लागि रही री ! माई २१६
हौं तो इहि बेनहुँ की चेरी ३४६
हौं तौ चरन–कमल–रज अटकी ४२७
हौं नँदलाल बिना न रहौं ४२४
हौं परभात समै उठि आई ८७
हौं रीझी तेरे दोऊ नैन ५२६
हौं लोभी लटकनि लाल की ४७४
हँसत गोपाल नंद के आगें नंद १०१
हँसत परस्पर करत कलोल २८६

प्रकीर्ण

नव भूषन नव बसन जसोदा १
यों रहे निसिदिन तेरे ही ध्यान २
सुमरों नंदराय कुमार ३
ब्रज जन सम धर पर कोउ नाहीं ४
हरि–जन–संग छनिक जो होई ५

● ● ●